अनुराग

बाल पत्रिका

त्रैमासिक

अक्टूबर-दिसम्बर 2005

दस रुपये

अक्टूबर–नवम्बर–दिसम्बर की महत्वपूर्ण तिथियाँ

23 अक्टूबर –

काकोरी काण्ड के शहीद एवं महान क्रान्तिकारी अशफाक़उल्ला का जन्मदिन।

26 अक्टूबर–

अन्याय और ज़ुल्म के ख़िलाफ संघर्षरत, भारतीय आज़ादी के प्रणेता तथा वाणी और कलम के सिपाही, गणेश शंकर विद्यार्थी का जन्म दिवस।

27 अक्टूबर–

शहीद क्रान्तिकारी यतीन्द्र नाथ दास का जन्मदिवस

7 नवम्बर (1917)

अक्टूबर क्रान्ति (रूसी क्रान्ति) दिवस मानवता की मुक्ति का वह महत्वपूर्ण ऐतिहासिक दिवस जब आम जनता के अपने राज्य की स्थापना हुई थी। महान क्रान्तिकारी ब्लादीमिर इल्यीच लेनिन के नेतृत्व में रूसी क्रान्ति सम्पन्न हुई थी और सोवियत संघ की स्थापना हुई थी।

13 नवम्बर –

जनपक्षधर लेखक एवं कवि गजानन माधव मुक्तिबोध का जन्म दिवस।

28 नवम्बर (मित्रता दिवस) –

फ्रेडरिक एंगेल्स का जन्म दिवस जनता के मुक्तिकामी दर्शन के प्रणेता, जर्मनी के राइन प्रान्त में जन्मे और कार्ल मार्क्स के अनन्य मित्र एवं सहयोगी

फ्रेडरिक एंगेल्स का जन्म दिवस जिसे पूरी दुनिया में मित्रता दिवस के रूप में मनाया जाता है।

17 दिसम्बर, (1927)–

काकोरी काण्ड के शहीद राजेन्द्र लाहिड़ी का शहादत दिवस

19 दिसम्बर, (1927)–

काकोरी काण्ड शहादत दिवस आज़ादी के इतिहास का वह काला दिन जब काकोरी काण्ड के तीन वीर सपूतों पं. रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाक़उल्ला एवं रोशन सिंह को फाँसी दी गयी थी।

26 दिसम्बर –

मानवता की मुक्ति के प्रतीक पुरुष एवं चीनी क्रान्ति के जनक माओ–त्से–तुङ का जन्म दिवस।

अनुराग
बाल पत्रिका

त्रैमासिक, वर्ष 10, अंक 4
अक्टूबर-दिसम्बर 2005

सम्पादक
कमला पाण्डेय

सह सम्पादक
अभिनव सिन्हा

सज्जा
रामबाबू

स्वत्वाधिकारी कमला पाण्डेय के लिए यशकरण लाल द्वारा डी-68, निराला नगर, लखनऊ से प्रकाशित तथा मुद्रक बाबूराव बोरकर द्वारा शान्ति प्रेस, नयागाँव (पश्चिम), लखनऊ से मुद्रित।

सम्पादकीय कार्यालय
डी-68, निरालानगर
लखनऊ-226020
फोन : (0522) 2786782

इस अंक का मूल्य : 10 रुपए
वार्षिक सदस्यता : 48 रुपए
(डाक व्यय सहित)

इस अंक में

संवाद

प्रिय बच्चो,

क्या तुम जानते हो कि 27 सितम्बर को भगतसिंह का जन्मदिन था। उन्होंने देश को अंग्रेजों की लूट और गुलामी से आजाद कराने के लिए अपनी जान कुर्बान कर दी। यह तो सभी को पता है। लेकिन बहुत कम लोग इस बात को जानते हैं कि उनकी लड़ाई सिर्फ अंग्रेज सरकार के खिलाफ नहीं थी बल्कि हर उस सरकार के खिलाफ थी जो लोगों को लूटने का काम करती थी फिर चाहे वे दूसरे देश के लोग हों या खुद अपने देश के। उन्होंने आजादी के बाद एक ऐसे राज्य का सपना देखा था, ऐसा समाज बनाना चाहा था जहाँ किसी तरह का कोई भेदभाव न हो–अमीर-गरीब, ऊँच-नीच में बँटवारा न हो। हर किसी को पढ़ने-लिखने, अपनी पसन्द का काम चुनने और इज्जत से जीवन बिताने का बराबरी से अवसर मिले। जहाँ कोई लूट, अन्याय न हो। कोई मालिक-नौकर न हो। सबके बीच एक इंसानियत और बराबरी का रिश्ता हो। सब लोग अपनी क्षमता के हिसाब से मेहनत से काम करें और अपनी जरूरतों के हिसाब से लें।

और बच्चो, भगतसिंह ने ऐसे राज्य और समाज के बारे में सिर्फ सोचा ही नहीं था उसे बनाने के लिए क्या किया जाय यह भी बताया था।

तो ऐसे थे भगतसिंह एक महान विचारक और एक महान क्रान्तिकारी। पर यह देखकर तुम्हारी इस नानी का दिल दुखता है कि उस महान क्रान्तिकारी ने आजाद भारत की जैसी तस्वीर बनाने की बात की थी वह तो दिखायी नहीं पड़ता। अपने आस-पास नजर दौड़ाओ तो तुम्हें भी नानी की बात समझ में आ जायेगी। जब तुम स्कूल जाते हो तो क्या तुम्हारी उम्र का कोई बच्चा चिथड़े पहने सड़क पर कूड़ा बीनता तुम्हें कभी दिखायी नहीं दिया। या होटल-ढाबे में झूठी प्लेटें उठाता–या फिर रेलगाड़ी के डिब्बों में, अपनी कमीज उतार कर फर्श बुहारता तुम्हें नजर नहीं आया। उसे आखिर पढ़ने का मौका क्यों नहीं मिल रहा है?

उसके जैसे और बहुत से बच्चे हैं जिन्हें पढ़ने-खेलने की उम्र में काम करना पड़ता है नहीं तो उसे और उसके घर वालों को रोटी नसीब न हो। भगतसिंह का सपना यह तो नहीं था कि आजाद भारत के बच्चे भूखे-नंगे हों। पढ़ाई-लिखाई, खेल-कूद से वंचित हों। अंग्रेजी शासन से हमारे देश को मुक्ति मिली, लेकिन भगतसिंह का सपना अधूरा रहा।

प्यारे नन्हे मुन्नो! तुम्हारी यह नानी तुमसे पूछना चाहती है क्या भगतसिंह का यह सपना कभी पूरा नहीं होगा, उसे पूरा करने की जिम्मेदारी क्या तुम नहीं उठाओगे?

शुभकामनाओं के साथ,

तुम्हारी नानी
कमला पाण्डेय

पोस्ट बाक्स

आपकी पत्रिका का मैं नियमित पाठक हूँ। पिछले अंकों में नाटक, 'अनाप–शनाप' मैं तुमसे अच्छा हूँ, अनोखा बीज, बहादुर, मंगल के सुलझते रहस्य, प्रोफेसर दीमक किर्र–किर्र, अखबार, सोने की खेती आदि पसन्द आई। इसके अतिरिक्त मुझे पत्रिका से नन्ही कलम, नई कलम, बालकूची, गोलू, कार्टून कैसे बनायें आदि स्तम्भ बहुत पसन्द आते हैं। आपकी पत्रिका की एक चीज पसन्द नहीं आती है कि वह नियमित रूप से नहीं आती है।

अभिषेक पुनेठा
कक्षा–पांच, गंगोलीहाट, पिथौरागढ

कहानी

उल्टा दरख्त

(कृश्नचंदर की लम्बी दिलचस्प कहानी 'उल्टा दरख्त' की आख़िरी किश्त)

(पिछले अंक की संक्षिप्त कहानी)

यूसुफ निडर और स्वाभिमानी लड़का था। मोची का बेटा होने का उसे फख्र था। बादशाह, शहजादी और व्यापारी ने चालाकी से उसे भूखों मरने तक की स्थिति में पहुँचा दिया। गाय के मूल्य के तीन रुपयों के बदले में उसने तीन दाने स्वीकार किये, उनमें से भी केवल एक ही दाना बचा जो बो देने पर उल्टे दरख्त के रूप में उगाता और नीचे (पाताल) की ओर बढ़ता गया। यूसुफ ने उस जगह हो गये दरार से घुसकर मीलों तक चली गयी दरख्त की डालों पर से चलते-चलते मशीनों के शहर को देखा जहाँ मुनाफाखोर बाप ने केवल अँगूठा बचे बच्चे को बटन दबाने भर के लिए जीवित रहने दिया। उसने डबलरोटी वाले की गरीब बेटी की जुल्म की कहानी सुनी, जिसे मार-मारकर रुलाया जाता था और जिसके आँसुओं को जो अद्‌भुत पारदर्शी मूल्यवान मोती बन जाते थे, व्यापारी और बादशाह बेचकर अपना खजाना भरते थे। युसूफ ने दोनों को मुक्ति के रास्ते पर चलने का प्रोत्साहन दिया। तीनों दोस्तों ने सोने और चाँदी के देवों की जादुई दुनिया देखी। चलते-चलते उन्होंने तीन धोखेबाज इलेक्शनबाजों को देखा और उस विकट परिस्थिति से जान बचाकर निकलने में सफल रहे। उन्होंने साँपों का भयाक्रान्त करने वाला दहशत भरा एक ऐसा शहर देखा जहाँ हर बन्दिश करने के बाद भी श्री साँप जी महाराज लोगों को डँसते थे... मोहन और शहजादी यूसुफ को तीन दिन के अन्दर सर्प दंश से मुक्ति के लिए प्रयत्नशील थे। इस लगन और उपक्रम में मोहन के हाथों की शेष चारों काटी गयी उँगलियाँ भी उग आयीं–और शहजादी उर्फ डबलरोटी वाले की बेटी में भी अपार साहस और संकट को तद्नुसार हल करने की सतर्कता उत्पन्न हो गयी–इस प्रकार उन्होंने यूसुफ को समय के अन्दर कैसे बचाया?

अब आगे पढ़े–

जब वह गुफा के दूसरी तरफ निकला तो उसने देखा कि वह एक ऊँचे पहाड़ की चोटी पर खड़ा है। चारों तरफ ऊँचे-ऊँचे पहाड़ हैं और पहाड़ों से घिरी हुई एक खूबसूरत वादी है। उसकी ढलान पर भेड़-बकरियाँ चर रही हैं। दरख्त फलों से, सेब, नाशपाती, आड़ू और अनारों से लदे हैं। जमीन पर घास मखमल की तरह मुलायम है। धान के खेतों में पानी चाँदी की तरह चमक रहा है और वादी के बीचों-बीच एक खूबसूरत किला खड़ा है। मोहन ने सोचा यही वह सोतों का शहर होगा।

मोहन पहाड़ से नीचे उतरने लगा। रास्ते में एक गड़रिया मिला जो भेड़ें चरा रहा था। मोहन ने उससे पूछा, "क्यों भई! वादी में यह किला और बहुत से मकान नजर आते हैं। क्या यही सोतों का शहर है?"

गड़रिया ने अहिस्ता से सरगोशी में कहा, "ऐं! गों! गों! गो....ओं! क्या कहते हो?"

मोहन ने चिल्ला कर कहा, "मैं पूछता हूँ, सोतों का शहर क्या यही है?"

"आँ! हाँ, या...ही है। खर्र...खर्र।"

गड़रिया अपनी बात कह के फिर दरख्त से टेक लगा के सो गया और खर्राटे लेने लगा। मोहन ने अपने दिल में कहा, "अजीब गड़रिया है यह!"

मोहन आगे चला तो कुछ दूर जा के उसने देखा कि एक पहाड़ी चश्मे के नीचे एक औरत घड़ा रखे बैठी है। करीब जाकर देखा तो मालूम हुआ, वह बैठी नहीं

है। बैठी-बैठी सो रही है। घड़ा भरा हुआ है और औरत घड़े को एक हाथ में थामे सो रही है। उसकी आँखें खुली हैं। मगर आँखें जैसे किसी चीज को नहीं देख रही हैं।

मोहन ने कहा, "घड़ा भर गया है। उठो, मैं पानी पी लूँ।"

"ऐं?" औरत ने अर्ध-निद्रा के आलम में कहा।

मोहन चिल्लाया, "मैं कहता हूँ घड़ा भर चुका है। उसे परे हटाओ। मैं चश्मे से पानी पिऊँगा।"

औरत आहिस्ता से उठी। आहिस्ता से उसने घड़ा उठाया, अपने सिर पर रखा और नीचे घाटी की ओर चल दी। चलते-चलते भी ऐसा मालूम हो रहा था जैसे वह जागते हुए नहीं, सोते हुए चल रही थी।

मोहन आगे बढ़ा तो उसे दस जुलाहे खड्डियों पर काम करते नजर आये। यहाँ भी वही हालत थी। ताना-बाना चल रहा था। मगर ख्वाब की हालत में जुलाहे के हाथ-पाँव काम करते थे। कपड़ा भी बुना जा रहा था मगर नींद की हालत में। मोहन ने एक ताने के दो-तीन तागे (धागे) तोड़ दिये तो एक जुलाहे ने बगैर किसी गुस्से के आहिस्ते से कहा,

"क्यों...तंग...कर...ते....हो......सो....जा. ...ओ।"

ऐसा मालूम होता था जैसे जुलाहों ने अफीम पी रखी है। मोहन आगे चला तो नाशपातियों के एक झुण्ड को देख कर खड़ा हो गया। पकी सुनहरी खूबसूरत नाशपातियाँ झुकी हुई शाखों से लटक रही थी। उन्हें देख कर मोहन के मुँह में पानी भर आया। उसने एक नाशपाती तोड़ने के लिए हाथ उठाया तो आवाज आयी, "ऐं! क्या करते हो? मुझे सोने दो ना...!"

पहले तो मोहन ने सोचा अजीब जगह है। यहाँ की नाशपाती भी सोती हैं और सोते-सोते बोलती हैं। फिर उसने सिर घुमा कर इधर-उधर देखा तो उसे एक दरख्त के नीचे माली आधा सोता और आधा जागता हुआ मिला। मोहन ने माली से पूछा, "खानकाह किधर है?"

"वह क्या है....सामने...जा...ओ....खर्र... खर्र।" माली जवाब देकर फिर सो गया।

खानकाह की सीढ़ियों पर पादरी खड़ा था। हाँ, वही पादरी था जिसका अता-पता बूढ़े ने बताया था। उस पादरी के गले में वही सलीब लटक रही थी और वह लाल भी जिसे पाकर यूसुफ की जान बच सकती थी। मोहन ने सोचा कमबख्त यह पादरी भी सोता हुआ मालूम होता है, सीधे उसकी गर्दन से लाल उतार कर ले चलो। सोतों की इस नगरी में किसी से कुछ माँगना या बात करना बेकार है। यह सोच कर मोहन ने सीधे उचक कर पादरी के गले में पड़े हुए लाल को झटकना चाहा। लेकिन पादरी ने बड़ी सख्ती से उसका हाथ पकड़ लिया और कहा, "तुम कौन हो? क्या बात है?"

मोहन ने हैरत से कहा, "अरे! तुम....तुम सोये हुए नहीं हो!"

"नहीं तो।" पादरी ने कड़क कर कहा।

"माफ कीजिएगा पादरी साहब, मुझसे गलती हो गयी। दरअसल, रास्ते में जितने आदमी मिले, सब सो रहे थे। मैंने सोचा आपको भी जगाने की जहमत क्यों करूं। अपना काम करके चलता बनूँ।"

"तुम्हें क्या काम है बेटे?" पादरी ने बड़ी नरमी से कहा।

अब मोहन ने सारी राम कहानी सुना दी और लाल की जरूरत बयान की। फिर बड़ी मिन्नत-समाजत से कहा, "देखिए पादरी साहब! अगर आप यह लाल नहीं देंगे तो मेरा दोस्त मर जायेगा।"

पादरी ने कहा, "मैं लाल तो दे सकता हूँ, मगर एक शर्त पर..."

"वह क्या है?"

"तुम्हें इस लाल के बदले मुझे मोतियों वाला शंख लाके देना होगा।"

"मोतियों वाला शंख? वह कहाँ मिलेगा? मेरे पास तो है नहीं!"

"मैं जानता हूँ वह तुम्हारे पास नहीं है। मगर तुम कोशिश करो तो लाके दे सकते हो।"

"तो जल्दी बताइए शंख कहाँ है?"

पादरी ने हाथ फैला के कहा, "नीचे वादी में वह किला जो है ना, उसमें सात देव रहते हैं। इस वादी पर उन्हीं देवों की हुकूमत है। उन देवों ने इस वादी के लोगों को सोते-जागते के चक्कर में फँसा कर रखा है। यानी सारी वादी के लोग ना तो इतने सोये हुए हैं कि कोई काम ना कर सकें और ना इतना जागे हैं कि अपना बुरा-भला सोच सकें। बस इस हालत में उन लोगों को छोड़ कर देव लोग अपने किले में बड़े आराम से पड़े ऐशो-इशरत की जिन्दगी बसर कर रहे हैं। वादी के तमाम लोग उनका काम करते हैं और देव लोग जो कुछ उन्हें दे देते हैं, खुशी से कबूल कर लेते हैं और काम किये जाते हैं। उन्हें मालूम भी नहीं है कि वे देवों के गुलाम हैं। वे अब आदमी नहीं रहे, सोई हुई भेड़ें बन चुके हैं। मैं उन्हें नींद से जगाना चाहता हूँ।"

"मगर उस मोतियों वाले शंख से क्या होगा?"

"जिस वक्त वह शंख मेरे हाथ में आ जायेगा और मैं उसे बजने को कहूँगा, तो उसकी आवाज सुनते ही यह सारी वादी और इसके सारे लोग जाग जायेंगे। उस वक्त देवों की हुकूमत खत्म हो जाएगी। शंख की आवाज उन लोगों के लिए जिन्दगी है और देवों के लिए मौत है।"

"वह कैसे?"

"बस, इधर ये लोग जागने शुरू हुए, उधर देव मरने शुरू होंगे। शंख की आवाज सुनकर देवों के कान फट जायेंगे। उनके दिमाग फट जायेंगे और वे मर जायेंगे। और यह वादी आजाद हो जाएगी। इसीलिये तो उन देवों ने उस शंख को इस किले में बड़ी हिफाजत से रखा हुआ है और दिन-रात पहरा देते हैं।"

"तो फिर मैं उसे कैसे हासिल कर सकता हूँ? मैं तो एक मामूली सा लड़का हूँ, पादरी साहब!"

"अगर तुम मुझे वह शंख लाके नहीं दोगे तो मैं यह लाल तुम्हें नहीं दूँगा।" पादरी यह कह कर खानकाह के अन्दर घुस गया।

दिन ढलता जा रहा था। शाम हो चुकी थी। मोहन बहुत घबराया। क्या करे और क्या ना करे। अगर उसे लाल अभी मिल जाता तो वह अभी वापस हो सकता था। कल दूसरा दिन शुरू हो जाएगा और बूढ़े ने कहा था कि अगर वह तीन दिनों में वापस आ गया तो यूसुफ की जान बच जाएगी वरना नहीं।

बहुत सोच-विचार के बाद मोहन ने किले के अन्दर घुस कर मोतियों वाला शंख चुराने का फैसला किया।

वह घाटी के नीचे उतर कर शहर की गलियों में घूमता रहा। जब रात का अँधेरा अच्छी तरह से चारों तरफ फैल गया तो उसने किले का रुख किया। किले के चारों तरफ गहरी खन्दक थी जिसमें पानी भरा था। किले

के बड़े फाटक के सामने लकड़ी का एक पुल था जो देवों की मर्जी से खन्दक के आर-पार लगाया जा सकता था। मोहन मौके का मुन्तजिर रहा। थोड़ी देर के बाद उसने देखा शहर के कुछ लोग आहिस्ता-आहिस्ता चलते हुए आए और खन्दक के इस पार आ कर खड़े हो गए। उन लोगों ने अपनी पीठ पर अनाज लादा हुआ था। किसी के हाथ में सब्जियाँ और फल थे। कोई गेहूँ लाया था, और कोई चावल। जुलाहे कपड़े लाए थे और गड़रिए भेड़ें और बकरियाँ। वे लोग खन्दक के इस पार सारा सामान रख कर वापस हो गए। अब वहाँ सिर्फ चार आदमी खड़े थे। दो नौजवान लड़कियाँ और दो नौजवान लड़के। चारों बहुत खूबसूरत थे।

मोहन ने उनसे पूछा, "तुम यहाँ क्यों खड़े हो?"

"हमको खा जाएगा।"

"तुमको खा जाएगा!" मोहन ने हैरत से पूछा।

"हाँ!" एक लड़का बोला, "हम चारों को आज देव लोग खा जायेंगे।"

"और तुम यह बात ऐसे मजे से सोते हुए आहिस्ता-आहिस्ता कह रहे हो जैसे तुम लोग दावत में जा रहे हो!"

"हाँ, दावत ही तो है!" तीसरी लड़की ने कहा।

"मगर...मगर, यह तुम्हारी जिन्दगी का सवाल है। तुम्हें लड़ना चाहिए।"

"देवों से कौन लड़ सकता है!" चौथे नौजवान ने कहा, "यह तो हमारी किस्मत है कि हमें खाया जाए। आखिर हम भी तो भेड़-बकरियाँ खाते हैं!"

"लेकिन तुम तो भेड़-बकरियाँ नहीं हो! तुम इंसान हो।"

"तो क्या हुआ?" पहला लड़का रुक-रुक कर बोला, "देव लोग कहते हैं कि इंसान का खून पीने में बहुत मजेदार होता है।"

"मगर...मगर..." मोहन इस कदर चकरा गया कि कुछ ना कह सका। ये चारों लड़के-लड़कियाँ बड़े आराम से खन्दक के किनारे खड़े अपनी मौत का इंतजार कर रहे थे। इतने में किले से एक लकड़ी का पुल नीचे लटका और खन्दक के ऊपर बिछ गया। फिर किले के ऊँचे फाटक खुले और अन्दर से एक देव लम्बे-लम्बे डग भरता हुआ बाहर आया। मोहन उसे देख कर जल्दी से भेड़ों में घुस गया। देव ने आकर सारे अनाज, सब्जी, फल, चारों नौजवानों, भेड़ों और बकरियों को अपनी बड़ी चादर के एक कोने में बाँध लिया और अपने कन्धे पर डाल कर किले के अन्दर चला गया।

किले के अन्दर जा कर वह सीधा बावर्चीखाने में घुस गया जहाँ बड़े-बड़े चूल्हे जल रहे थे। देव ने अनाज को अलग रखा। सब्जी-तरकारी को अलग रखा। भेड़-बकरियों को अलग रखा और मोहन को उठा कर चारों नौजवानों के साथ यूँ बाँध दिया जैसे रसोइया साग की एक गड्डी को धागे से बान्ध देता है।

"हा! हा! आज हमारी रिआया (प्रजा) ने चार के बजाय पाँच इंसान हमारी दावत के लिए भेजे हैं!" देव खुशी से गरजा और बाकी देवों को यह खुशखबरी देने के लिए चला गया।

जब देव चला गया तो मोहन ने बाकी साथियों से कहा, "आओ, इस रस्सी को तोड़ डालें और बाहर भाग चलें।"

"भाग कर कहाँ जायेंगे? अपनी किस्मत से भाग कर आदमी कहाँ जा सकता है!" वे चारों बोले।

मोहन रस्सी को तोड़ने की कोशिश करने लगा।

इतने में देव बाकी साथियों को ले के आ गया। ये सातों देव मोहन को देख कर बड़े खुश हुए।

"हमारी रिआया समझदार होती जा रही है।" एक देव बोला जिसके सिर पर सफेद सींग उगे थे।

"हाँ, कल से आप उन्हें हुक्म दीजिए कि हर रोज पाँच इंसान हमारे खाने के लिए भेजा करें।" सफेद सींग वाले देव ने काले सींग वाले देव से कहा।

काले सींग वाले देव ने बावर्ची खाने में काम करने वाले देव से कहा, "अब जल्दी से खाना तैयार कर डालो और सबसे पहले इनको पका लो।"

देव ने मोहन और दूसरे साथियों की तरफ इशारा किया।

"बहुत अच्छा!" देव ने रस्सी खोल दी और मोहन और दूसरे सब नौजवानों को साफ करने के लिए एक डोल में डाल दिया और खुद छुरी लेने के लिए किचन के दूसरे कमरे में चला गया।

मोहन ने अपने साथियों से कहा "आओ, यहाँ से भाग चलें। मौत सिर पर मण्डला रही है।"

"अरे भाई! हमें मरने दो ना। आराम से सोने दो ना।" चारों ने बड़े थके हुए लहजे में कहा।

मोहन हिम्मत कर के डोल से जो उछला तो एक मछली की तरह तड़प कर नीचे फर्श पर आ गया और वहाँ से जल्दी से भाग कर बड़े-बड़े बर्तनों की कतार के पीछे से होता हुआ बावर्ची खाने के बाहर चला गया और एक अंधेरी सीढ़ी के पीछे जा कर छिप गया।

थोड़ी देर में भाग-दौड़ शुरू हो गयी। देव उसे ढूँढने के लिए इधर-उधर दौड़ रहे थे। मुख्तलिफ कमरों में सामान उठा के पटका जा रहा था और मोहन सीढ़ी के नीचे छिपा हुआ अपनी जिन्दगी की घड़ियाँ गिन रहा था। यकायक सीढ़ियों के ऊपर दो देवों की गुफ्तगू सुनाई दी, "आज तक कभी ऐसा नहीं हुआ!"

"सफेद सींग वाला कहाँ है?"

"वह शंख वाले कमरे के बाहर पहरा दे रहा है।"

"उसे बुलाओ ना। उसकी नाक तो इंसान को फौरन सूँघ लेती है। जरा सी देर में क्या हो जाएगा। शंख तो ताले के अन्दर है!"

"अच्छा बुलाता हूँ।"

एक देव वापस चला गया। दूसरा सीढ़ियों के ऊपर सफेद सींग वाले देव को बुलाने गया।

मोहन जल्दी से कदम उठा के आहिस्ता-आहिस्ता सीढ़ियाँ चढ़ने लगा उसका ख्याल था कि इस मौके पर देव पलट के नहीं देखेगा। उसका ख्याल ठीक निकला।

देव धम-धम करता हुआ सफेद सींग वाले के पास गया जो शंख वाले कमरे के बाहर पहरे दे रहा था।

सफेद सींग वाला देव उस देव को देखते ही बोला, "मानुष गन्ध! मानुष गन्ध!"

"कहाँ है मानुष गन्ध?" दूसरे देव ने बड़ी सख्ती से चिल्ला कर कहा। "इसी लिए तो मैं आया हूँ कि वह पाँचवाँ इंसान भाग गया है। तुम चल कर उसे तलाश करो।"

"मगर यह शंख?"

"यहाँ मैं पहरा देता हूँ।"

देव घूमा। मोहन भी उसके पीछे-पीछे घूम गया।

सफेद सींग बोला, "मुझे तुमसे मानुष गन्ध आती है।"

"कहाँ से आती है? मेरी जेब टटोल के देख लो। मैंने किसी इंसान को नहीं छिपा रखा है।"

सफेद सींग उसकी जेब टटोलने लगा। मोहन पीछे से भाग के शंख वाले कमरे के अन्दर चला गया।

जब सफेद सींग को काले सींग की जेब में से कोई इंसान ना मिला तो उसने शंख वाले कमरे को ताला लगाया और चाबी जेब में रख के दूसरे देव को साथ लेकर नीचे बावर्ची खाने में चला गया।

उधर मोहन ने दरवाजा बन्द होते देख कर जरा इत्मीनान का साँस लिया और इधर-उधर देखा। कमरे के चारों तरफ बड़े-बड़े पिंजरे लटके हुए थे जिनमें गाने वाले खुश-आवाज परिन्दे थे। बुलबुल, मैना, तोते वगैरा अपनी-अपनी बोलियाँ बोल रहे थे। कमरे के बीच में एक बहुत बड़ी मेज पर मखमल के कपड़े के ऊपर शंख जगमग-जगमग कर रहा था। मोहन खुशी से चिल्लाया और जल्दी से भाग कर मेज की तरफ गया। "अब जान बच गई।" मोहन ने सोचा, "मैं इस शंख को उठा कर अभी बजाना शुरू करता हूँ और इसकी आवाज से देव लोगों के दिमाग फट जाएंगे। और फिर सारी वादी बेदार (जाग) हो जायेगी।"

यह सोच कर मोहन ने शंख को हाथ लगाया ही था कि एक आवाज आई, "खबरदार!"

मोहन ने पहले तो इधर-उधर देखा। उसे ख्याल हुआ शायद उसे किसी ने देख लिया है। थोड़ी देर इधर-उधर देखने के बाद उसने फिर शंख को हाथ लगाया तो फिर आवाज आई, "खबरदार जो मुझे हाथ लगाया।"

मोहन बड़ा हैरान हुआ, "उफ्फोह! तो आप बोलते हैं?"

"हाँ, शंख का काम बोलना है। मैं क्यों ना बोलूँ?"

"मगर आपको तो...मेरा मतलब है लोग शंख को मुँह से बजाते हैं। मगर आप खुद-बखुद बोलते हैं!"

"हाँ! मैं खुद-बखुद बोलता हूँ।"

"तो चलिए! मैं आपको अपने हाथों में उठाये लेता हूँ। आप बोलना शुरू कीजिए। जोर-जोर से ताकि देवों के कान फट जायें।"

"अच्छा, उठाओ मुझे।"

मोहन ने शंख को उठाने की कोशिश की, मगर शंख बहुत भारी था। मोहन से उठाया नहीं गया।

"आप तो बहुत भारी हैं।"

"तो मैं क्या करूँ!"

"तो आप यहीं से चिल्लाना शुरू कर दीजिए।"

"नहीं!" शंख बोला, "जब तक कोई मुझे उठा कर अपने मुँह तक ना ले जाएगा, मैं नहीं चिल्ला सकता।"

"मगर मैं आपको उठा नहीं सकता!" मोहन बोला।

"तो मैं चिल्ला नहीं सकता।"

"आप तो बहुत भारी हैं। शंख तो इतना भारी नहीं होता। सीप का शंख तो बहुत हल्का होता है।" मोहन ने कहा।

"मैं कोई मामूली शंख नहीं हूँ।" शंख ने जवाब दिया। "मैं लोगों को जगाने वाला शंख हू। मुझे उठाने के लिए ताकत चाहिए।"

"मगर मैं तो एक मामूली लड़का हूँ।" मोहन ने उदासी से कहा, "क्या आपका वजन किसी तरह कम नहीं हो सकता?"

"हो सकता है।" शंख बोला, "मगर इसके लिए तुम्हें फिर से दरख्त पर जाना होगा। और तीन मील ऊपर चढ़कर जब एक बड़ी डाल..."

"बाईं तरफ या दाईं तरफ?" मोहन ने बात काट कर शंख से पूछा।

"दाईं तरफ। तो उस डाली पर तीन मील चल के एक हीरों का जड़ा हुआ दरवाजा आएगा। दरवाजा के अन्दर चले जाना। मगर, खबरदार! दरवाजा को हाथ ना लगाया। अन्दर जाओगे तो दो सौ गज ऊँची सीढ़ी मिलेगी। सीढ़ी के ऊपर चढ़ते जाना। खबरदार! जो सीढ़ियों के दो तरफ की सोने की दीवारों को हाथ लगाया। सीढ़ी चढ़ के तुम्हें एक आलीशान कमरा मिलेगा। इस कमरे की हर चीज सोने की होगी, यहाँ तक कि उस कमरे के अन्दर जो आदमी होगा उसका जिस्म भी सोने का होगा। उस आदमी के पास एक कौआ है जिसकी चोंच में चाँदी की डिब्बिया है। उस डिब्बिया के अन्दर गुलाब का एक फूल है।"

"गुलाब का फूल?"

"हाँ, गुलाब का फूल। और उस गुलाब के फूल में यह खासियत है कि यह फूल कभी नहीं मुरझाता। हमेशा तरो-ताजा और खुशबूदार रहता है। अगर तुम उस आदमी से वह गुलाब का फूल ले आओ और उसको मुझसे छुआ दो तो मैं भी फूल की तरह हल्का हो जाऊँगा। फिर तुम मुझे अपने हाथ में उठा लो और मैं उन जालिम देवों को मार दूँगा।"

"हुश्श! वह दरवाजा खुला।"

मोहन जल्दी से मुड़ा। मगर दरवाजा देव ने खोल लिया था और उसने मोहन को देख लिया था। सफेद सींग वाला खुशी की एक चीख मार कर मोहन को अपनी मुट्ठी में कुचलने ही को था कि शंख ने आहिस्ता से कहा, "देव जी महाराज! उस बच्चे को छोड़ दीजिए।"

"क्यों?"

"यह आपकी वादी का बच्चा नहीं हैं। यह बाहर से आया है। यह सोते इंसानों का बच्चा नहीं है, यह जागते इंसानों का बच्चा है। मैं इससे बातें करूँगा तो मेरा दिल बहला रहेगा। मेरा कहना मानिए तो उसे एक पिंजरे में बन्द कर के मेरे करीब रख दीजिये। मेरा दिल उससे बातें करने को चाहता है।"

"मगर मेरा दिल उसे खाने को चाहता है।"

"जब मेरा दिल उससे बातें करके भर जायेगा तब आप उसे खा लीजियेगा।"

"हाँ, यह ठीक है।"

देव ने मोहन को एक बड़े पिंजरे में इस तरह बँद कर दिया जिस तरह लोग किसी तोते या मैना को पिंजरे में बँद करते हैं। फिर उसे शंख के सामने रख दिया और दरवाजा बँद कर के ताला लगा के चला गया।

जब दूसरा दिन गुजर गया और मोहन नहीं आया तो शहजादी बहुत परेशान हुई और बूढ़े से कहने लगी, "जरा जादू के आईने में देखो, मोहन कहां है?"

बूढ़े ने आईने के तार जोड़े। आईने की सतह पहले तो बेहद गन्दली हो गई। जैसे चारों तरफ तूफान छा रहा हो। थोड़ी देर बाद सतह खुद-ब-खुद साफ हो

गई। अब आईने में एक पिंजरा लटका हुआ नजर आ रहा था। इस पिंजरे में मोहन बन्द था।

"मोहन!" शहजादी जोर से चिल्लाई।

मोहन ने पिंजरे से एक हाथ निकाल कर कहा, "शहजादी, मुझे बचाओ।"

शहजादी ने मोहन का हाथ पकड़ने के लिए अपना हाथ बढ़ाया तो हाथ लगाते ही अँधेरा छा गया और मोहन आईने की सतह से गायब हो गया।

शहजादी मायूस हो कर बूढ़े की तरफ पलटी और रो-रो कर बोली, "मैं आपके पाँव पड़ती हूँ, मोहन को किसी तरह बचा लीजिए।"

बूढ़े ने कहा, "मोहन एक ही सूरत में बच सकता है।"

"वह किस तरह?"

"अगर कोई सोतों के शहर के देवों को मार दे और मोहन को पिंजरे से निकाल ले।" बूढ़े ने कहा।

"उन देवों को मारने की क्या सूरत हो सकती है?" शहजादी ने पूछा।

"उन देवों की जान एक पहाड़ी कौए में है और उस कौए का पिंजरा सोतों के शहर से सौ मील दूर एक ऊँचे पहाड़ की चोटी पर एक बहुत बड़े किले के अन्दर लटका हुआ है। अगर कोई उस कौए की चोंच में दबी हुई चाँदी की डिबिया खोल के उसमें से गुलाब का फूल निकाल ले और कौए को मार दे तो सोतों के शहर के सारे देव मर जायेंगे। फिर अगर गुलाब के फूल को मोतियों के शंख के ऊपर रख दिया जायेगा तो मोहन का पिंजरा खुद-बखुद खुल जायेगा। और मोतियों का शंख फूल की तरह हल्का हो जायेगा। फिर वह शंख आसानी से उठा कर पादरी को दिया जा सकता है और पादरी से उसके गले का लाल ले कर यूसुफ की जान बचाई जा सकती है।"

शहजादी रोने लगी और बोली, "यह सब कुछ एक दिन में तो क्या एक हफ्ते में भी नहीं हो सकता।"

बूढ़े ने उसे हिम्मत दिलाई और बोला, "अगर तू कोई शहजादी है तो वाकई इस काम को नहीं कर सकती। लेकिन अगर तू डबलरोटी वाले की लड़की है तो इस काम को जरूर कर सकती है।"

शहजादी बोली, "मैं सचमुच डबलरोटी वाले की लड़की हूँ।"

"तो मेरी छड़ी ले जा।" बूढ़े ने अपनी परों वाली छड़ी उसके हाथ में दे कर कहा, "इस वक्त पैदल चलने से काम ना होगा। इस छड़ी पर घोड़े की तरह सवारी की जा सकती है। जितनी देर तक तू इसके परों पर हाथ रखे रहेगी, यह छड़ी हवा में उड़ती चली जायेगी। जब उसके परों पर से हाथ उठा लेगी तो यह खुद-ब-खुद हवा में उड़ना बन्द कर देगी और जमीन पर उतर आयेगी।"

शहजादी ने छड़ी पर सवार हो कर कहा, "चल, मुझे पहाड़ी कौए के पिंजरे के पास ले चल।"

इतना सुनते ही छड़ी के पर जोर-जोर से फड़फड़ाने लगे। चन्द लम्हों के बाद शहजादी हवा में उड़ी चली जा रही थी। उलटे दरख्त की शाखें मीलों तक उसकी निगाह के नीचे फिसलती जा रही थी। कुछ अर्से के बाद छड़ी एक तरफ को मुड़ गयी। अब छड़ी एक गहरी गुफा में से गुजर रहा था। शहजादी को बहुत डर लगा। मगर वह मजबूती से छड़ी के परों पर हाथ रखे बैठी रही।

थोड़ी देर बाद छड़ी सोतों के शहर की वादी के ऊपर उड़ रही थी। ऊपर और ऊपर, छड़ी बादलों में गायब हो गयी। अब चारों तरफ धुँध ही धुँध थी। बादल इधर-उधर जाते, अरना भैंसों की तरह एक-दूसरे से टकरा जाते। बिजली की कड़क पैदा होती। बादल गरजने लगते। शहजादी के सारे कपड़े पानी से सराबोर हो गये, मगर शहजादी बहुत ही मजबूती से छड़ी के परों पर हाथ रखे बैठी रही। आखिर छड़ी बादलों से भी ऊँचा उड़ने लगी।

फिर शहजादी ने देखा कि बादलों से भी ऊँचा एक पहाड़ है। इस पहाड़ पर ना कहीं कोई दरख्त है, ना घास है और ना झाड़ियाँ। बस चारों तरफ बर्फ ही बर्फ पड़ी है। और बड़ी-बड़ी चट्टानों के ऊपर कहीं-कहीं आदमियों की हड्डियाँ और पंजर बिखरे पड़े हैं। और यह पंजर पहाड़ की ढलान से ले कर उसकी चोटी तक बिखरे पड़े थे।

छड़ी पहाड़ की चोटी की तरफ बढ़ रही थी। पहाड़ की चोटी पर एक खूबसूरत किला था जो कदरे सोने की तरह चमकता नजर आता था। जब शहजादी किले के करीब पहुँची तो उसने देखा कि वाकई किला सोने का बना हुआ है। ईंटें, दीवारें और दरवाजे, सीढ़ियाँ, खिड़कियों, हर चीज सोने की बनी हुई थीं।

सबसे ऊँचे बुर्ज पर सुनहरी तार के पर्दे सरसरा रहे थे। इस बुर्ज की छत से एक सुनहरी जंजीर लटक रही थी। इस जंजीर से एक पिंजरा लटक रहा था। इस पिंजरे में एक कौआ अपनी चोंच में चाँदी की एक छोटी सी डिब्बिया दबाए बैठा था। बुर्ज की फर्श पर चारों तरफ खौफनाक शेर मुँह खोले बैटे थे। शहजादी को देख कर दहाड़ने लगे।

शहजादी ने डरते हुए कहा, "छड़ी, ऊपर उड़ो।"

छड़ी किले के बिल्कुल ऊपर उड़ने लगी।

शहजादी कुछ सोचने लगी। थोड़ी देर के बाद शहजादी ने छड़ी से कहा, "मुझे किले के दरवाजे पर ले चलो।"

छड़ी चक्कर काटती हुई नीचे उतरने लगी। जब वह किले के दरवाजे पर पहुँची तो शहजादी ने परों पर से हाथ हटा लिया। छड़ी एकदम किले की सीढ़ियों पर रुक गयी और शहजादी ठोकर खाते-खाते बची। छड़ी को हाथ में ले कर शहजादी सीढ़ियाँ चढ़ती हुई किले के दरवाजे पर आई। उसने देखा कि दरवाजा बिल्कुल खुला हुआ था।

शहजादी किले के अन्दर दाखिल हो कर इधर-उधर देखने लगी। कहीं कोई आदमी नजर नहीं आया।

"कोई है? कोई है?" शहजादी की आवाज गुम्बद से टकरा के वापस आई। फिर चारों तरफ सन्नाटा छा गया।

शहजादी डरते-डरते आगे बढ़ी। बड़े हाल से गुजर कर ऊँची सीढ़ियों की एक कतार आती थी जिसके ऊपर बहुत से इंसानों के पंजर पड़े थे। शहजादी ये सीढ़ियाँ भी चढ़ गई। सीढ़ियों के ऊपर का दरवाजा बन्द था। शहजादी ने हाथ से जोर लगा के दरवाजा खोलना चाहा, मगर दरवाजा नहीं खुला। उसकी इसी कोशिश में अचानक शहजादी की छड़ी दरवाजे को छू गयी। छड़ी के छूते ही दरवाजा 'चर्ररर...' कर के खुद-बखुद खुलने लगा।

शहजादी आहिस्ता-आहिस्ता अन्दर दाखिल हुई। यह एक बहुत बड़ा आलीशान कमरा था। छत पर हीरे-जवाहरात के फानूस लटक रहे थे। सोने की दीवारों में खुशनुमा कटी हुई बारीक-बारीक सोने की जालियाँ थी। उनसे धीमी-धीमी रोशनी छन-छन के आ रही थी। शहजादी के कदम एक बहुत ही खूबसूरत दरवाजे पर आकर रुक गये जो सालिम (पूरी तरह) नीलम का बना हुआ था। शहजादी ने देखा कि कमरे में कोई नहीं है।

शहजादी ने चिल्ला के कहा, "कोई है...?"

"कोई है? कोई है?" शहजादी की आवाज गुम्बद से टकरा कर लौट आई।

फिर थोड़ी देर के बाद चारों ताफ कहकहों की आवाज आने लगी। "हा..हा! हा..हा! किसको ढूँढती हो? हाहाहा! कोई है? अरे भई! यहाँ सब कोई हैं। तुम किसको ढूँढती हो? हा..हा..हा। अन्दर आ जाओ।"

शहजादी डरते-डरते दरवाजे के अन्दर दाखिल हुई।

इस कमरे में एक पूरा दरख्त सोने का बना हुआ था। उसकी शाखों में जवाहरात जगमग-जगमग कर रहे थे। सोने की दीवारों में जाले लगे थे, मगर वह भी सोने

के थे। जमीन पर मिट्टी पड़ी थी। मेज, कुर्सियाँ, गुलदान हर चीज सोने की थी। मगर गर्द से अटी पड़ी थी। शहजादी ने हाथ लगा के देखा। यह गर्द भी सोने की थी!

एक सुनहरे बिस्तर पर एक लड़की लेटी हुई थी। उसके बाल सुनहरी, रुखसार सुनहरी, होंठों की चमक सुनहरी। सिर से पैर तक सोने की मूरत मालूम होती थी। वह चुपचाप सोई पड़ी थी।

शहजादी ने उसे जगाना चाहा। मगर जब झिंझोड़ने के लिए हाथ लगाया तो उसे यह जान कर बड़ी हैरत हुई कि वह लड़की सारी की सारी सोने की थी। उस लड़की के बिस्तर के करीब ही एक आराम कुर्सी पड़ी थी। उसपर एक बूढ़ा आदमी लेटा था। शहजादी ने चिल्ला के कहा, "बापू!"

मगर नहीं। यह उसका बाप नहीं था, हालाँकि पहले पहल उसे अपना बाप मालूम हुआ।

शहजादी ने एक कदम आगे बढ़ाया तो उसे यह बुड्ढा जौहरी मालूम हुआ।

"जौहरी!" शहजादी चिल्लाई और पीछे हटी क्योंकि अब उसे उस बुड्ढे के चेहरे में अपना नीलाम करने वाले जालिम आदमी का चेहरा दिखाई दे रहा था।

"जालिम! जालिम!" शहजादी डर के मारे पीछे हट के चीखी।

"घबराओ नहीं।" किसी ने करीब से हँस के कहा, "यह आदमी तुम्हें कोई नुकसान नहीं पहुँचा सकता। यह तो सारे का सारा सोने का बना हुआ है।"

शहजादी ने पलट के इधर-उधर देखा। मगर उसे कहीं पर कोई आदमी नजर ना आया।

शहजादी ने चिल्ला के कहा, "तुम कौन हो? कहाँ छिपे खड़े हो? सामने आ कर बात करो।"

"मैं यहाँ तुम्हारे सामने तो बैठा हूँ!"

"कहाँ?" शहजादी ने तुरन्त पूछा।

"यहाँ! तुम्हारे सामने।" आवाज आई।

मगर शहजादी के सामने तो कुछ भी नहीं था। बस उसके करीब ही एक सुनहरी तिपाई पर एक सितार रखा था जिसके तार खुद-ब-खुद हिलते हुए मालूम होते थे।

"क्या तुम बोलते हो!" शहजादी ने हैरत से पूछा।

"हाँ! मैं ही बोलने वाला सितार हूँ।" सितार ने झुँझला कर कहा।

"तो यह सब माजरा क्या है भाई?"

सितार ने हँस कर कहा, "सितार कभी भाई हो सकता है! मैं तो एक बेजान सितार हूँ।"

"मगर यह लड़की कौन है?" शहजादी ने जल्दी से पूछा।

"यह लड़की उस बूढ़े की बेटी है।"

"यह तो सोने की है! इसको क्या हुआ?"

"इस किले के अन्दर की हर चीज सोने की है। मुर्गियाँ सोने की हैं और सोने के अण्डे देती हैं। फौवारे सोने के हैं और सोने का पानी उछालते हैं। दरख्त, फल, फूल, पत्ते-यहाँ हर चीज सोने की है। हद तो यह है कि अगर तुम इस कमरे के अन्दर रोटी पकाओगी तो वह भी तवे पर तप कर सोने की हो जायेगी।"

शहजादी आगे बढ़ी। सितार ने चिल्ला कर कहा, "हाथ लगाओगी तो सोने की हो जाओगी।"

शहजादी पीछे हट गई और बोली, "मगर यह आदमी जिन्दा है। उसका दिल हरकत कर रहा है।"

"हाँ!" सितार ने कहा, "उसका सारा जिस्म सोने का हो चुका है। मगर दिल चूँकि सोने का नहीं हुआ, इस लिए यह आदमी अभी जिन्दा है।"

"उसका दिल क्यों सोने का नहीं हुआ?" शहजादी ने फिर सवाल किया।

"पहले-पहल तो उसे सोने से बड़ी मुहब्बत थी। हर चीज को हाथ से छू कर उसे सोना कर दिया करता था। चुनांचे मैं भी किसी जमाने में मामूली लकड़ी का सितार था। अब सोने का हूँ। और बहुत भारी हो गया हूँ। बातें करते-करते तार दुखने लगते हैं। हाँ, तो मैं क्या

कह रहा था?"

"तुम यही कह रहे थे कि यह आदमी बड़ा जालिम था और अपने पारस पत्थर से हर चीज को सोना कर दिया करता था।"

"हाँ, लेकिन एक दिन जब उसने गलती से अपनी बेटी को अपने पारस पत्थर से छू लिया और उसकी बेटी सोने की हो गई तो उस आदमी को सोने से नफरत हो गई। उसने हजार कोशिश की कि सोने की बनी हुई बेटी फिर से जिन्दा गोश्त-पोस्त की लड़की बन जाए, मगर उसे कामयाबी नहीं हुई। क्योंकि किसी चीज को सोने में तब्दील करना आसान है, मगर सोने को गोश्त में तब्दील करना बिल्कुल नामुमकिन है। चुनांचे जब यह अपनी बेटी को दोबारा जिन्दा करने में कामयाब ना हुआ तो उसने अपने-आप को भी पारस पत्थर से छू लिया और सोना हो गया। मगर चूँकि उसके दिल में सोने से नफरत पैदा हो चुकी थी। इस लिए दिल अभी तक अन्दर से गोश्त का है और हर दम धड़कता है। हा! अब तुम तो बताओ कि तुम क्यों यहाँ आई हो। क्या पारस पत्थर की तलाश में? रास्ते में क्या हजारों लालची आदमियों के पंजर नहीं देखे जो इसी पारस पत्थर की तलाश में चल कर यहाँ पहुँचे और इस कोशिश में मर गये।"

"देखे हैं।" शहजादी ने कहा, "मगर मुझे तुम्हारा पारस पत्थर नहीं चाहिए। मुझे पहाड़ी कौआ चाहिये।"

"पहाड़ी कौअे पर तो शेरों का पहरा है। और ये शेर सिर्फ इसी बुड्ढे का कहा मानते हैं जो इस कुर्सी पर तुम्हारे सामने बेहोश लेटा है। पहाड़ी कौअे को पकड़ने की कोई सूरत नहीं हो सकती। बस एक सूरत हो सकती है।"

"वह क्या?" शहजादी ने जल्दी से कहा।

"यहाँ आस-पास कहीं से तुम पानी ला सकती हो?"

"पानी! पानी की पहाड़ों पर क्या कमी हो सकती है।" शहजादी बोली, "मैं ने रास्ते में चट्टानों पर चारों तरफ बर्फ ही बर्फ देखी है।"

"बेवकूफ! वह तो सोने की बर्फ है। इस पहाड़ पर जितने चश्मे हैं, वे सब के सब सोने के हैं। उनमें से पानी के बजाय सोना पिघल कर बहता है। इस पहाड़ पर सब कुछ है, मगर पानी नहीं है।"

"पानी को ले कर क्या करोगे?"

"अगर तुम कहीं से पानी ले आओ...बस सादा पानी, और उसे इस आदमी पर और उसकी बेटी पर छिड़क दो तो ये दोनों फिर से जिन्दा हो जायेंगे। अपने सोने के जिस्म को छोड़ कर फिर से गोश्त-पोस्त के इंसान बन जायेंगे। फिर तुम उस बुड्ढे से पहाड़ी कौआ माँग सकती हो क्योंकि तुम उसकी जान बचाओगी इसलिये यह तुम्हें पहाड़ी कौआ जरूर देगा।"

"तुम क्यों इस बुड्ढे की इतनी तरफदारी करते हो?" शहजादी बोली।

"इसलिए कि यह अपनी गलती तस्लीम कर चुका है। इसे काफी सजा मिल चुकी है और मैं एक रहमदिल सितार हूँ। और मैं फिर से गाना चाहता हूँ। एक जमाना था जब मैं लकड़ी का था। और यह खूबसूरत लड़की अपनी प्यारी-प्यारी उँगलियाँ मेरे सीने पर फेर के ऐसे-ऐसे खूबसूरत राग गाया करती थी कि क्या बताऊँ! मैं उन दिनों को फिर से वापस लाना चाहता हूँ जब मेरे सीने से नग्मे फूट कर निकलते थे। अब मैं बोल सकता हूँ, गा नहीं सकता।"

"गा क्यों नहीं सकते?"

"गाने के लिए खूबसूरत उँगलियों की जरूरत होती है। इंसान की जिन्दा उँगलियों की। और इस जिन्दगी के लिए सोने की नहीं, सिर्फ सादे पानी की जरूरत है। क्या तुम कहीं से पानी नहीं ला सकती? अगर तुम पानी ले आओ, तो मैं तुम्हें उसके बदले पारस पत्थर, सोने के उबलते चश्मे, सोने की मुर्गी, यह सारा सोने का किला दे सकता हूँ।"

"मुझे कुछ नहीं चाहिए।" शहजादी ने कहा, "मैं सिर्फ पहाड़ी कौआ चाहती हूं।"

शहजादी छड़ी पर सवार हो गई और उसके

परों पर हाथ रख के बोली, "जल्दी से किसी सादे पानी के चश्मा पर ले चलो।"

छड़ी के पर फड़फड़ाए। चन्द लम्हों में छड़ी फिर से हवा में परवाज कर रही थी। थोड़ी ही देर में उस सुनहरी पहाड़ की घाटियों से नीचे फिसलती चली गयी। फिर अँधेरे में सफर करने लगी। फिर घूम-घूम कर बादलों का चक्कर खाती हुई यकायक एक सरसब्ज हरी-भरी वादी में जा उतरी जहाँ लम्बी-लम्बी घास उगी थी और घाटियों पर सब्जपोश दरख्त खड़े थे और दो चट्टानों को चीर कर एक खूबसूरत झरना नीचे वादी में गिर रहा था।

इस झरने के नीचे बहुत सी औरते घड़ों में पानी भर रही थी। शहजादी ने जल्दी से पानी की भरी हुई एक घड़िया उठाई और इसके पहले कि घड़िया की मालिक औरत चिल्ला सकती, वह छड़ी पर सवार हो के उड़ गई। औरतें हैरत से देखने लगीं। बल्कि कई एक गश खा के गिर पड़ी। शहजादी छड़ी पर सवार हो कर वापस किले में पहुँची। रास्ते में जहाँ-जहाँ वह इंसानी पंजरों पर पानी छिड़कती गई, वहाँ-वहाँ मुर्दे जिन्दा हो कर उसका शुक्रिया अदा करने लगते।

किले के अन्दर पहुंच कर उसने सबसे पहले बूढ़े

पर पानी छिड़का। बुड्ढा फिर से गोश्त-पोस्त का बन गया। शहजादी ने फिर जल्दी से बुड्ढे की खूबसूरत बेटी पर पानी छिड़का। वह भी जिन्दा हो गई और अपने बाप से बगलगीर होने के लिए आगे बढ़ी। लेकिन ऐन उसी वक्त किसी ने जोर से कहा, "खबरदार! आगे ना बढ़ना। उसके हाथ में अभी तक पारस पत्थर है।" यह सितार बोल रहा था।

बुड्ढे ने जल्दी से अपने हाथ से पारस पत्थर की अँगूठी उतार के किले के बाहर फेंक दी और दोनों हाथ बढ़ाए अपनी बेटी से बगलगीर हुआ। बाप-बेटी दोनों ने शहजादी का शुक्रिया अदा किया। और जब शहजादी ने अपना मतलब जाहिर किया तो बुड्ढे ने बड़ी खुशी से उसकी दरखास्त कबूल कर ली। वह खुद ऊपर के बुर्ज में जा के अपने सधाए हुए शेरों के बीच में से पहाड़ी कौए का पिंजरा उठा लाने के लिए रवाना हुआ। ऐन इसी वक्त किसी ने कहा, "और हमें यहीं छोड़े जाने लगे? सच है इंसान बड़ा नाशुक्रा होता है।"

शहजादी ने पलट कर सितार की तरफ देखा और फिर उसपर भी पानी छिड़क दिया। सोने का सितार फिर से लकड़ी का सितार बन गया। और बुड्ढे की बेटी ने अपने सितार को पहचान कर अपने गले से लगा लिया। टपटप उसकी आँखों से आँसू बह निकले और सितार के तारों पर बहने लगे और फिर उन तारों से ऐसा खूबसूरत राग निकलने लगा कि किले का हर दरख्त फिर से हरा-भरा हो गया। और जहाँ सोने के पत्ते थे, वहाँ हरी-हरी पत्तियों निकल आईं। और जहाँ सोने के फूल थे, वहाँ नाजुक पँखुड़ियों वाले फूल महक उठे। और जहाँ नंगी चट्टानें थीं, वहाँ घास निकल आई। और जहाँ सोने के तपते हुए चश्मे उबलते थे, वहाँ ठण्डा मीठा पानी कल-कल करता हुआ जमीनों को तर करने लगा।

सोने की वादी में फिर से बहार आ गई।

ऊपर के बुर्ज में जा कर बुड्ढे ने इस हरे-भरे मंजर को देख कर शहजादी से कहा, "हाँ, तुम अब पहाड़ी कौआ ले जा सकती हो।"

"इस पहाड़ी कौए में और क्या खास बात है?"

"इस पहाड़ी कौए की आँखों में पुतलियों की बजाय पारस पत्थर है। इस कौए के मर जाने के बाद पारस पत्थर दुनिया से लुप्त हो जायेगा।"

बुढ़े ने सुनहरी जंजीर से पिंजरा खोल कर शहजादी के हाथ में थमा दिया। शहजादी छड़ी पर सवार हो कर चन्द लम्हों में सोतों के शहर में पहुँच गई। छड़ी देवों के किले की ऊँची-ऊँची दीवारों के ऊपर से उड़ता हुआ सीधा किले के अन्दर जा उतरी। किले के अन्दर पहुँचते ही देव "मानुष गन्ध! मानुष गन्ध!" कहते हुए चीखते-चिल्लाते शहजादी की तरफ बढ़े।

शहजादी ने जल्दी से पिंजरा खोल के कौए की चोंच से चाँदी की डिब्बिया निकाल के अपने पास रख ली और कौए के दोनों पर नोच कर फेंक दिए।

परों का नोचना था कि देवों के दोनों बाजू कट के अलग गिर पड़े। जोर से चिल्लाते हुए खौफनाक दहाड़ें मारते हुए वे शहजादी की तरफ लपके। शहजादी ने कौए की दोनों आँखें फोड़ दीं। पहाड़ी कौए की आँखें फूटते ही देव बिल्कुल अंधे हो गए। अब उन्हें शहजादी नजर ना आती थी। और वे अँधेरे में इधर-उधर पागलों की तरह दौड़ने लगे।

एक देव जिसके नथुनों में आदमी को सूँघने की ताकत सबसे ज्यादा थी गिरता-पड़ता किसी ना किसी तरह शहजादी के करीब पहुँच गया। शहजादी के करीब पहुँच के उसने अपना पाँव शहजादी के जिस्म के ऊपर रखना चाहा। मगर उसी वक्त शहजादी ने बड़ी फुर्ती से काम लिया और जल्दी से पलट कर घूम गई। उसने जल्दी से कौए को टाँगों से पकड़ा और उसे बीच से चीर डाला। कौए को चीरते ही चारों तरफ से बादलों की कड़क और गरज पैदा हुई। जमीन ऐसे काँप उठी जैसे भूंचाल आ गया हो।

किले के बुर्ज टुकड़े-टुकड़े हो कर गिर पड़े और शहजादी भी जलजले के धक्के से बेहोश हो कर गिर पड़ी।

थोड़ी देर के बाद जब उसे होश आया तो क्या देखती है कि ना तो वह किला है, ना वे देव। ना वह बुर्ज है, और ना खन्दक। एक सर-सब्ज विस्तृत मैदान है जिसमें मखमल की तरह नरमो-मुलायम घास गलीचे की तरह बिछी हुई है। और रंग-रंग के फूल अपनी बहार दिखा रहे हैं इस मैदान के बीच में एक मेज रखी है और उस मेज पर वह मोतियों वाला शंख रखा है। और उसके करीब एक पिंजरा पड़ा है जिसमें मोहन बन्द है।

मोहन को देखते ही शहजादी बेअख्तियार उसकी तरफ दौड़ी और जल्दी से पिंजरा खोल के उसे आजाद किया।

फिर उसने चाँदी की डिब्बिया से गुलाब का फूल निकाला और उसे शंख पर रख दिया।

शंख पर रखते ही गुलाब का फूल गायब हो गया और शंख फूलों की तरह हल्का हो गया। मोहन ने उसे अपने हाथों में उठा लिया और छड़ी पर सवार हो कर दोनों पादरी के पास चले गये और उसके हाथ में शंख दे दिया।

पादरी शंख को ले कर बहुत खुश हुआ। उसने शंख से कहा, "उठो मेरी दुनिया के गरीबों को जगा दो।"

मगर शंख खामोश रहा।

पादरी ने गुस्से से मोहन की तरफ देखा और कहा, "तुमने मुझसे धोखा किया है। यह असली मोतियों वाला शंख नहीं है। तुम कोई दूसरा जाली शंख उठा लाये हो।"

मोहन ने कहा, "नहीं, वहीं शंख है।"

"तो फिर यह बोलता क्यों नहीं?" पादरी ने पूछा।

मोहन ने उलट-पलट के देखा। बिल्कुल वहीं शंख था। उसने शंख से पूछा, "तुम बोलते क्यों नहीं?"

मगर शंख फिर भी नहीं बोला।

पादरी ने गुस्से से कहा, "जाओ, तुम्हें लाल नहीं मिलेगा।"

शहजादी ने शंख मोहन के हाथ से छीन कर अपने होंटों से लगा लिया। फिर जोर से शंख को फूँका।

यकायक शंख जोर-जोर से गाने लगा :

"उठो मेरी दुनिया के गरीबों को जगा दो!"

उसकी आवाज सारी वादी में गूँज उठी। और जहाँ-जहाँ लोग सोये पड़े थे, या अर्ध-निद्रा में थे, या आधे जगे थे, वहाँ-वहाँ सब लोग यह आवाज सुन कर जागते गए। खुशी से उनकी आँखों में आँसू आ गये। आज बरसों के बाद वे जागे थे और अपने दोस्तों-अजीजों को पहचान रहे थे और उनके गले मिल रहे थे। सारी वादी में बहार आ गई थी। और शंख जोर-जोर से गा रहा था :

"उठो मेरी दुनिया के गरीबों को जगा दो!"

पादरी ने खुशी से शंख को कलेजे से लगा लिया और बोला, "मैं समझ गया। अब यह देवों का शंख नहीं है। यह इंसान का शंख है। यह खुद नहीं बोलेगा। इसमें इंसान की साँस और उसकी मेहनत बोलेगी।"

पादरी ने मोहन और शहजादी की तरफ देखा और गर्दन झुका के अपने गले का लाल उतार के उनके हवाले कर दिया। शहजादी और मोहन छड़ी पर सवार हो कर उसी दम वापस हुए, क्योंकि वक्त बहुत कम था और सूरज मगरिब (पश्चिम) को जा रहा था।

थोड़ी देर के बाद मोहन और शहजादी उड़ते हुए छड़ी की मदद से सब्ज कबा वाले बूढ़े के पास साँपों के शहर में पहुँच गये। सूरज अभी अस्त नहीं हुआ था। लेकिन मगरिब की तरफ देख कर अन्दाजा होता था कि कोई आध घण्टे में अस्त हो जायेगा। बूढ़े ने लाल हाथ में ले कर कहा, "वक्त बहुत कम है। मगर चलो चलते हैं। एक आखिरी कोशिश कर के देख लेते हैं।"

बूढ़े ने छड़ी हाथ में ली और मोहन और शहजादी को साथ ले के बुलन्द मीनार की तरफ रवाना हुए जहाँ साँपों के शहर की सरकार रहती थी।

रास्ते में बूढ़े ने मोहन और शहजादी से कहा, "मीनार के अन्दर घुसने की सिर्फ एक तरकीब है। इसे अच्छी तरह समझ लो। इसमें अगर जरा भी भूल-चूक हो गई तो सब काम चौपट हो जाएगा और यूसुफ किसी तरह ना बच सकेगा।"

"बताइए।" मोहन ने कहा, "हम उसपर अमल करेंगे।"

बूढ़े ने कहा, "वह सामने मीनार का लोहे का जंगला नजर आ रहा है। वहाँ जा के हम तीनों रुक जाएंगे। फिर मीनार के अन्दर से एक आवाज आएगी, 'तुम कौन हो' उसके जवाब में सिर्फ यह कहना, 'हम सरकार के गुलाम हैं।' इसपर हमें आगे बढ़ने की इजाजत दी जाएगी। जब हम मीनार के अन्दर वाले फाटक पर पहुँचेंगे तो हमें फिर रुकना पड़ेगा। इस फाटक के बीच में एक सूराख है। इस सूराख के अन्दर से वे लोग हमें झाँक कर देखेंगे और इस बात का पता चलायेंगे कि हम वाकई सरकार के गुलाम हैं या नहीं।"

"इसका पता उन्हें कैसे चलेगा कि हम सरकार के गुलाम हैं? और फिर हमारे पास इसका क्या सबूत है कि हम सरकार के गुलाम हैं?"

"देखो वह तरकीब मैं तुम्हें बताता हूँ। जब तुम उस दरवाजे के पास पहुँचो तो खबरदार अपनी पलकों को किसी हालत में ना झपकाना। बस चुपचाप टकटकी बाँधे सूराख की तरफ देखते रहना। किसी हालत में पलकें ना झपकाना। सरकार के गुलामों की सबसे बड़ी निशानी यह है कि वे पलकें नहीं झपकाते, चुपचाप हाथ बांधे हुक्म की तामील के लिए खड़े रहते हैं। समझ गए?"

शहजादी ने कहा, "जी! समझ गए।"

बूढ़े ने फिर खबरदार करते हुए कहा, "जो कुछ मैंने कहा है उसपर हर्फ-बा-हर्फ अमल करना। नहीं तो यूसुफ की जिन्दगी का मैं जिम्मेदार नहीं हूँ।"

इसके बाद बूढ़ा, मोहन और शहजादी तीनों मीनार के आहनी जंगले के पास जा खड़े हुए। मीनार

के अन्दर से आवाज आई, "कौन है?"

उन तीनों ने जवाब दिया, "सरकार के गुलाम।"

"क्या काम है?"

"सरकार की गुलामी चाहते हैं।"

"आगे बढ़ो।" आवाज आई।

ये तीनों आगे बढ़े। वाकई मीनार के बड़े फाटक के अन्दर एक छोटा-सा सूराख था। उसके करीब जा कर तीनों खडे हो गए। चन्द मिनट तक बिना पलक झपकाये खड़े रहे हत्ता कि मोहन की आँखों में जलन पैदा होने लगी और शहजादी की आँखों से आँसू बहने लगे। अगर चन्द मिनट तक और इसी तरह खड़े रहना पड़ता तो शायद शहजादी की पलकें झपक जातीं। मगर खैर हुई कि थोड़े अर्से के बाद फाटक खुद-ब-खुद खुला और खुल कर खुद-ब-खुद फौरन बन्द हो गया।

मीनार के अन्दर जा कर बाबा ने अपने हाथ से इशारा कर के कहा, "इस जीने पर चढ़ते चलो। हमें पहले सीधे बर्फखाने के अन्दर जाना चाहिए। सूरज अस्त हो रहा है।"

भागते-भागते वे बहुत सी सीढ़ियाँ तय कर गए। और ऐन उस वक्त जब सूरज अस्त हो रहा था, वे तीनों बर्फखाने के अन्दर पहुँच गए। और बूढ़े ने वह लाल यूसुफ के माथे से लगा दिया।

लाल ने डंक वाली जगह से जहर चूसना शुरू किया। और उस वक्त एक अजीब मंजर दिखाई दिया। ज्यों-ज्यों लाल जहर चूसता जाता था, मीनार के अन्दर की रोशनी कम होती जाती थी। थोड़ी देर में बर्फखाने के जीने पर सैकड़ों भागते हुए कदमों की आवाजें सुनाई देने लगी। ये कदम बर्फखाने की तरफ भागते चले आ रहे थे। बाबा ने आगे बढ़ कर बर्फखाने का दरवाजा बन्द कर दिया।

जहर पी कर लाल की रंगत हरी होती जा रही थी। यूसुफ के चेहरे पर जिन्दगी की सुर्खी दौड़ने लगी। यकायक लाल ने सारा जहर चूस लिया और यूसुफ ने आँखें खोल दी। और उसके आंखें खोलते ही मीनार में चारों तरफ अँधेरा छा गया। और चारों तरफ से साँपों की खौफनाक फुँकारें सुनाई देने लगीं।

"लाल कहाँ है? लाल कहाँ है?" बूढ़े ने घबरा कर अँधेरे में टटोलना शुरू किया।

"मेरे हाथ में है।" यूसुफ ने चिल्ला के कहा।

लाल के अन्दर से हरे रंग की रोशनी फूट-फूट के निकल रही थी। चारों तरफ से साँपों की फुँकारें बढ़ती जा रही थी। ना जाने साँप किन तहखानों के अन्दर से होते हुए बर्फखाने में आ रहे थे।

बाबा ने चिल्ला के कहा, "जल्दी करो। इस लाल को तोड़ डालो।"

यूसुफ ने बाबा के हाथ से छड़ी ले ली और उसकी चाँदी की मूँठ को लाल पर मार-मार कर उसे टुकड़े-टुकड़े कर दिया।

लाल के टुकड़े होते ही एक जोर का धमाका हुआ। चारों तरफ बिजली-सी कौंध गई और इस बिजली की रोशनी में बूढ़े ने देखा कि मीनार ऊपर से नीचे तक फट गया है और अड़ाड़ाधम कर के सारी इमारत नीचे आ रही है।

बूढ़े ने चिल्ला के कहा, "भागो, भागो! यहाँ से फौरन भागो।"

बूढ़े ने शहजादी को अपने बाजुओं में उठा लिया और यूसुफ और मोहन को छड़ी पर सवार कर के मीनार से फौरन बाहर निकल आया। उनके निकलते ही मीनार की सारी इमारत धम से नीचे गिर पड़ी।

सारा शहर हिल गया। बहुत से मकान गिर गये। शहर के ऊपर जो लोहे की जाली लगी हुई थी, वह तो साफ उड़ गई और शहर से बहुत दूर जा पड़ी। लोग चीखते-चिल्लाते हुए घरों से बाहर निकल आये। रास्ते में उन्होंने बहुत से छोटे-छोटे साँपों को मरे हुए देखा। मीनार के पास उन्होंने एक अजीब तमाशा देखा।

उन्होंने देखा कि मीनार के मलबे के पास बहुत

से अजदहे (अजगर) और खौफनाक साँप मरे पड़े है। लाल, जवाहर और कीमती साजो-सामान के ढेर बिखरे हुए पड़े हैं और उनके करीब एक हरे किबा वाला बूढ़ा खड़ा है और उसके साथ एक लड़की और दो छोटे लड़के हैं और वे तीनों हैरत से इस सारे मंजर को देख रहे हैं।

लोग बूढ़े के पास आ कर झुक गये और उसका शुक्रिया अदा करने लगे कि उसने उन्हें साँपों से निजात दिलाई।

बूढ़े ने कहा, "मेरा शुक्रिया अदा ना करो। इन तीन नन्हे-मुन्ने बच्चों का शुक्रिया अदा करो जिनकी बहादुरी से तुम्हारी जिन्दगी बच गई हैं। आज के बाद तुम्हें कोई साँप नहीं काटेगा। साँपों की सरकार हमेशा के लिये खत्म हो गई है।"

लोगों ने खुशी से तीनों बच्चों को अपने कंधों पर उठा लिया और सारे शहर में बड़ी धूम-धाम से उनका जुलूस निकाला।

उस रात ये तीनों बच्चे बाबा के तहखाने में सोये। सुबह उठ कर यूसुफ ने बूढ़े का शुक्रिया अदा किया और दरख्त पर आगे बढ़ने की इजाजत चाही।

बूढ़े ने कोई जवाब नहीं दिया और अपने जादू के आईने को ठीक करने में मसरूफ हो गया।

यूसुफ ने पूछा, "बाबा! हम जायें?"

यकायक जादू का आईना काम करने लगा। यूसुफ ने देखा कि एक झोंपड़ा है और उसके बाहर बहुत से लोग जमा हैं और शोरो-गुल कर रहे हैं। यकायक यूसुफ ने पहचान लिया कि यह तो उसका झोंपड़ा है।

बूढ़ा कुछ ना बोला। जादू के आइने को देखता रहा।

फिर यूसुफ ने देखा कि बहुत से सिपाही एक खाट उठा कर बाहर लाये और उसे जोर से फेंक दिया। खाट पर सोई एक बुढ़िया घबरा के उठी और चीखने लगी, "यूसुफ! युसुफ! तुम कहाँ हो? बादशाह के सिपाही मेरा घर छीन रहे हैं। यूसुफ, मेरे बेटे, तुम कहाँ हो?"

"माँ!" यूसुफ के मुँह से बेअख्तियार निकला।

बूढ़े ने पलट कर कहा, "तुम्हारी माँ मुसीबत में है।"

"हाँ बाबा!" यूसुफ ने घबरा के कहा, "मुझे फौरन उसकी मदद के लिए पहुँचना चाहिये।"

बाबा ने जादू के आईने के तार अलग कर दिये और आहिस्ता से कहा, "तो चलो, चलते हैं।"

बाबा ने तीनों को बिठाया और उलटे दरख्त की शाखों से नीचे को जाने लगे। अब तक यूसुफ और उसके साथी दरख्त के ऊपर चढ़ते आ रहे थे, मगर अब वे वापस यूसुफ के घर को जा रहे थे।

सैकड़ों मील तक नीचे और नीचे दरख्त की शाखें फैली हुई थी और उन शाखों के ऊपर गोया तैरते हुए वे तीनों जा रहे थे।

यकायक मोहन ने पूछा, "बाबा! उस शहर में जिसे हम अभी पीछे छोड़ के आये हैं, वे साँप कहाँ छिपे हुए थे?"

बाबा ने कह, "वे साँप नहीं थे, वे आदमी थे और आदमी के भेष में लोगों के साथ रहते थे। और वक्त और मौका देख कर डंक मारते थे। ऐसे आदमी साँपों से भी ज्यादा खतरनाक होते हैं जो आदमी के भेष में रहते हैं और लोगों को डसते हैं।"

"ऐसे लोगों की पहचान क्या है?" शहजादी ने पूछा।

"बेटी ऐसे लोगों के दिलों में जहर भरा रहता है। और उनकी आँखों में पुतलियों की बजाय चाँदी की टिकलियाँ होती हैं। अगर तुम उन आँखों को गौर से देखो तो तुम उनको बखूबी पहचान सकोगी। यही वे आदमी हैं जो आदमियों को लूटते हैं और उनमें लड़ाइयाँ कराते हैं। उन आदमियों की आँखों में पुतलियाँ नहीं होती हैं, चाँदी की गोल-गोल टिकलियाँ होती हैं।"

छड़ी तेजी से उड़ी जा रही थी। अब दरख्त का

तना नजदीक आ रहा था और दरार से रोशनी भी छन कर आ रही थी। थोड़ी देर में छड़ी नीचे उतरती हुई दरार के बाहर निकल आयी। अब वे चारों यूसुफ के झोंपड़े के बाहर के छोट से बागीचे में थे जहाँ बहुत से गाँव वाले, गाँव का खोजा, बादशाह और सिपाही जमा थे। और यूसुफ की माँ रो-रो कर बयान कर रही थी।

यूसुफ ने चिल्ला के कहा, "माँ!"

माँ ने हैरान हो कर अपने बेटे की तरफ देखा। फिर दौड़ कर उससे बगलगीर हुई। वह यूसुफ का मुँह चूमती जाती थी और रोती जाती थी।

यकायक बादशाह ने गुस्से से चिल्ला कर कहा, "इसे भी पकड़ लो।"

बादशाह के सिपाहियों ने यूसुफ को पकड़ लिया।

बूढ़े ने बादशाह से पूछा, "इस गरीब लड़के का क्या कसूर है?"

बादशाह ने कहा, "यह भगोड़ा है। यह मेरी फौज में लड़ना नहीं चाहता। मैं साथ वाले मुल्क पर हमला करना चाहता था। उसने मेरी फौज में शामिल होने से इनकार कर दिया।"

"तुम दूसरे मुल्क पर क्यों हमला करना चाहते थे?"

"मुझे दौलत की जरूरत है।"

"तुम कितनी दौलत चाहते हो?" बूढ़े ने पूछा और अपनी किबा में हाथ डाल कर मुट्ठी भर लालो-जवाहर जमीन पर बिखेर दिये।

बादशाह और उसके सिपाही जल्दी-जल्दी लालो-जवाहर चुनने लगे। बूढ़े ने दूसरी बार जेब में हाथ डाल के एक और मुट्ठी लालो-जवाहर निकाले और उन्हें उलटे दरख्त वाले गड्ढे में फेंक दिया।

चन्द सिपाहियों ने दरार के अन्दर छलाँग लगा दी।

बादशाह ने उस बूढ़े से कहा, "यह तुमने क्या किया?"

बूढ़े ने कहा, "मैंने तुम्हें रास्ता दिखाया है। हम लोग इस गुफा के अन्दर से आये हैं। वहाँ अन्दर लालो-जवाहर की लाखों खदानें हैं। वहाँ तुम इतनी दौलत समेट सकते हो जितनी यहाँ कभी हासिल नहीं कर सकते।"

बादशाह और उसकी लालची बेटी दोनों ने गड्ढे में छलाँग लगा दी।

यूसुफ ने चिल्ला के कहा, "ठहरो! ठहरो!"

मगर बूढ़े ने उसका हाथ पकड़ के कहा, "उन्हें मत रोको। यह सब लोग गड्ढे में जा चुके हैं। अब तुम जल्दी से इस दरार को मिट्टी डाल के भर दो।"

यूसुफ हैरान खड़ा रहा।

बूढ़े ने मुड़ कर गाँव वालों से कहा, "अगर तुम बादशाह से हमेशा के लिए छुटकारा हासिल करना चाहते हो तो यही वक्त है। जल्दी से गड्ढे को मिट्टी डाल के भर दो। कहीं बादशाह लौट ना आये।"

बात यूसुफ की समझ में आ गई। यूसुफ ने बेलचा हाथ में ले लिया और मिट्टी डालने लगा। उसकी देखा-देखी गाँव के दूसरे नौजवान भी मिट्टी डालने लगे। थोड़ी देर में सारे गाँव ने गड्ढे को मिट्टी डाल के भर दिया।

जब गड्ढा बिल्कुल भर गया और मिट्टी जमीन के बराबर हो गई तो यूसुफ ने बड़ी हसरत से कहा, "मगर, बाबा! इसके अन्दर तो मेरा दरख्त था।"

बूढ़े ने कहा, "वह दरख्त तो अब भी मौजूद है। उस दरख्त पर चढ़ के तुमने जिन्दगी का इतना तजुर्बा हासिल किया है। अब उस तजुर्बे से अपने गाँव वालों को भी फायदा पहुँचाओ। इस दरख्त ने जो कुछ तुम्हें सिखाया है, वह सब तुम अपने हमसायों को सिखा सकते हो।"

"मगर, बाबा! मैं तो पूरे तौर पर उस दरख्त पर चढ़ा भी नहीं।" यूसुफ ने कहा, "मैंने तो उसकी चोटी भी नहीं देखी। बाबा! मुझे उस दरख्त की चोटी देखने की बड़ी ख्वाहिश थी।"

बूढ़े ने मुस्करा कर कहा, "बेटा! यह कोई मामूली दरख्त नहीं है। यह इंसान की तरक्की का दरख्त है। उसकी चोटी आज तक किसी ने नहीं देखी।"

यूसुफ के चेहरे से परेशानी और हैरत दूर हो गई। उसके दिल के बहुत से तारीक कोनों में रोशनी फैल गई। यकायक उसकी समझ में बहुत कुछ आ गया। उसने बड़ी इज्जत से बाबा की कबा को चूम लिया और बोला, "बाबा! तुमने मुझे बहुत कुछ सिखाया है। मैं तुम्हारा शुक्रिया कैसे अदा कर सकता हूँ। बस मैं यही अर्ज करना चाहता हूँ कि आज से यह झोंपड़ा आपका है। आज से आप हमारे साथ रहो बाबा, इस छोटे से झोंपड़े में। यहाँ मोहन भी रहेगा और शहजादी भी।"

बाबा ने शहजादी के सिर पर हाथ फेर के कहा, "यूसुफ सभी छोटी लड़कियाँ शहजादी होती हैं। तुम इसको अपने घर में रखो और अपने दोस्त मोहन को भी। अपनी माँ की खिदमत करो। अपने गाँव वालों को अपने इल्म और तजुर्बे से फायदा पहुँचाओ। मैं चलता हूँ।"

"क्यों बाबा? आप रुकेंगे क्यों नहीं?" मोहन ने पूछा।

"रुक जाइये।" शहजादी ने बाबा से लिपट कर बड़े प्यार से कहा।

"रुक नहीं सकता, बेटी।" बाबा ने आहिस्ता से कहा, "मेरा काम रुकना नहीं, चलना है। मैं चलता रहता हूँ। हमेशा चलता रहता हूँ क्योंकि मेरा नाम तारीख (इतिहास) है।"

यह कह कर बाबा ने फड़फड़ते परों वाली छड़ी को अपने हाथ में लिया और आगे चल पड़ा। और बहुत दूर तक यूसुफ, शहजादी और मोहन की निगाहें उसका पीछा करती रहीं। आखिर रास्ते के एक मोड़ पर आ के वह उनकी निगाहों से ओझल हो गया।

यूसुफ की माँ ने बड़े प्यार से यूसुफ और उसके साथियों की तरफ देखा और कहा, "बाबा ठीक कहता था। चलो, तुम्हारा घर तुम्हारी राह देख रहा है।"

और यूसुफ ने मोहन और शहजादी का हाथ पकड़ा और तीनों यूसुफ की माँ के पीछे फूलों वाली क्यारी से गुजरते हुए झोंपड़े के अन्दर चले गये।
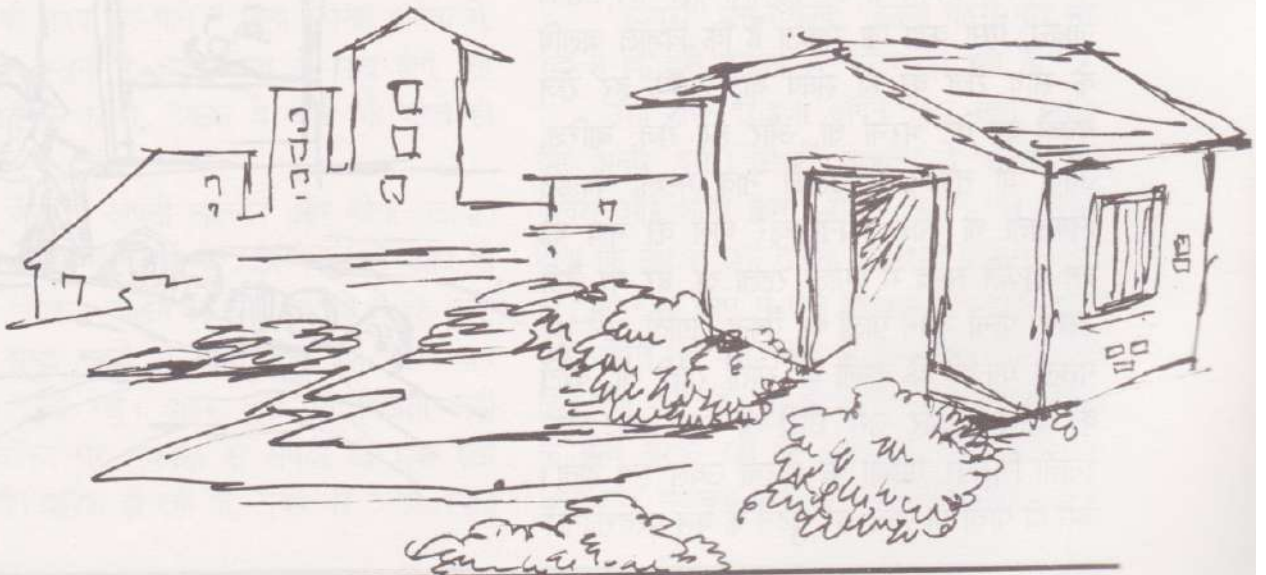
कहानी

जैनी

–विक्टर ह्यूगो

रात का समय था। झोंपड़ी साधारण, पर गर्म और आरामदेह थी। शाम के धुँधलके में कमरे की चीजें धुँधली सी नजर आ रहीं थी और आग के जलते-बुझते कोयलों से ऊपर छत के लकड़ी के लट्ठे लाल हो रहे थे। मछुआरे के मछली पकड़ने के जाल दीवार पर टँगे थे। कोने में बनी सादी-सी शैल्फ पर कुछ घरेलू बर्तन भाँडे चमक रहे थे। एक बड़े से पलँग के अलावा, एक गद्दे को कुछ पुरानी बेंचों पर भी बिछाया गया था जिस पर पाँच छोटे बच्चे ऐसे सो रहे थे जैसे घोंसले में चिड़िया के बच्चे। पलँग के किनारे, खिड़की की किनारी पर अपना माथा टिकाये बच्चों की माँ बैठी थी। वह अकेली थी। केबिन के बाहर, स्याह समुद्र तूफानी झाग की पट्टियों के साथ, गरज और उफन रहा था, और उसका पति समुद्र की ओर गया हुआ था।

वह बचपन से ही मछुआरा रहा था। उसका जीवन, ऐसा कहा जा सकता है कि विशाल जलधि के साथ रोज का ही संघर्ष था, क्योंकि हर रोज बच्चों का पेट भरना था, और हर रोज, बारिश, आँधी या तूफान में उसकी नाव मछली पकड़ने निकलती थी और अपनी चार पाल की नाव को वह अकेले समुद्र में घुमाता रहता था, घर पर बैठी उसकी पत्नी पुराने पालों पर पैबन्द लगाती, फटे हुए मछली पकड़ने के जालों को सीती रहती थी, काँटों को जाँचती और उस छोटी-सी आग का ध्यान रखती जिसपर मछली का शोरबा उबल रहा होता। जैसे ही पाँचों सो जाते, वह घुटने के बल परवरदिगार से प्रार्थना करती कि लहरों और अँधेरे के साथ जूझने में वह उसके पति के साथ रहे। और सचमुच ही उसके पति का जीवन कठिन था। जहाँ पर मछली मिलने की सबसे ज्यादा सम्भावना थी, वह जगह विशाल लहरों के बीच एक छोटा-सा बिन्दु भर होता, उसकी खुद की झोंपड़ी से बस करीब दुगुना बड़ा–एक छिपा हुआ, छलने वाला स्थान, जो उस बदलते मरुस्थल जैसे सागर में, कोहरे, तूफान और सर्दी की रात के बीच में ढूँढना पड़ता था, इकलौते अनुभव और कौशल से लहरों और ज्वारों के ज्ञान से। और वहाँ-जहाँ उफनती, अँधेरे की खाई पलटती और मचलती, पाल को बाँधने वाली रस्सियाँ जोर लगाकर जैसे भय से सिसकतीं, लहरें उसके चारों ओर हरे अजगरों सी गुजरतीं, ऐसे में,

बर्फीले समुद्र के बीच, वह अपनी जैनी के बारे में सोचता, और जैनी अपनी कुटिया में आँखों में आँसू लेकर उसके बारे में सोचती।

वह उसके बारे में सोच रही थी और प्रार्थना कर रही थी। समुद्री चिड़िया (सीगल) की कर्कश और मजाक उड़ाने जैसी पुकार उसे परेशान कर रही थी, और चट्टान पर लहरों का गर्जन उसकी आत्मा को डरा रहा था पर वह विचारों में खोई थी–अपनी गरीबी के बारे में सोचती हुई। उनके नन्हें बच्चे गर्मी और सर्दी में नंगे पाँव घूमते थे। उन्हें गेहूँ की रोटी नसीब न थी, नसीब थी तो केवल बाजरे की। हे ईश्वर! तूफानी हवा ऐसे गरज रही थी जैसे लुहार की धौंकनी हो और समुद्री किनारा चोट पड़ने पर निहाई (एहरन) की तरह गूँज रहा था। वह काँप गई और रोने लगी। बेचारी औरतें जिनके पति समुद्र में गए थे! कितना भयानक था यह कहना, मेरे नजदीकी लोग–पिता, पति, भाई, बेटे–सब तूफान में हैं! लेकिन जैनी और भी ज्यादा दुखी थी। उसका पति अकेला था–इस भयानक रात में बिना सहायता के, निपट अकेला। बेचारी माँ। अभी सोचती है, "काश ये बड़े होते तो अपने पिता की मदद कर पाते।" भोला सपना! भविष्य में, जब वे तूफान में अपने पिता के साथ होगें, वह आँसुओं से कहेगी, "काश वे अभी भी बच्चे ही होते।"

जैनी ने अपनी लालटेन और चोगा उठाया। "अब समय हो गया है" उसने अपने आप से कहा, "देखना चाहिये कि वह आ रहे हैं कि नहीं, और समुद्र पहले से शान्त हुआ कि नहीं" वह बाहर चली गई। बाहर कुछ भी दिखता नहीं था–क्षितिज पर मुश्किल से सफ़ेदी की एक रेखा भर थी। बारिश हो रही थी, सुबह की ठण्डी, स्याह बारिश। कुटिया की किसी भी खिड़की में से रोशनी नहीं चमक रही थी।

तभी अचानक, आसपास नजर दौड़ाते हुए, उसे एक टूटी-फूटी पुरानी झोंपड़ी नजर आयी, जिसमें आग या रोशनी का कोई चिन्ह नहीं दिख रहा था। तेज हवा में उसका दरवाजा झूल रहा था, कीड़ों की खाई दीवारें मुश्किल से ही उस छत को झेल पा रही थीं, जिसमें हवा पीले, गन्दे, सड़े हुए छप्पर को हिलाये जा रही थी।

'ठहरो' उसने कहा, "मैं तो उस बेचारी विधवा को भूल ही गई जो उस रोज मेरे पति को अकेली और बीमार मिली थी। मुझे देखना चाहिये कि वह कैसी है।"

उसने दरवाजा खटखटाया और सुनने लगी। किसी ने जवाब नहीं दिया। जैनी ठण्डी समुद्री हवा से ठिठुरने लगी।

"वह बीमार हैं। और उसके बच्चे बेचारे! उसके पास दो ही हैं; पर वह बहुत गरीब है और उसका पति नहीं है।"

उसने फिर खटखटाया और पुकारा, "अरे, पड़ोसन!" लेकिन वह झोंपड़ी बिल्कुल शान्त रही।

"ईश्वर!" उसने कहा, "इतनी गहरी नींद सो रही है कि इसे उठाना ही कठिन हो रहा है!"

उसी क्षण दरवाजा अपने आप खुल गया। वह अन्दर घुसी। उसकी लालटेन ने अन्दर का अँधेरा और शान्त कमरा रौशन किया। तब उसने देखा कि छप से एक छलनी की तरह पानी चू रहा था। कमरे के कोने में एक डरावना रूप पड़ा था : एक औरत नंगे पैरों, बिना देखती आँखों और बिना हिले डुले पड़ी थी। उसकी ठण्डी बाँह फूस के गद्दे के नीचे लटक रही थी। वह मृत थी। जो किसी वक्त एक मजबूत और प्रसन्न माँ रही होगी, अब

केवल एक छाया थी, जो संसार के लम्बे संघर्ष के बाद गरीब मानवों की बचती है।

जिस चारपाई पर माँ लेटी थी, उसके पास ही दो नन्हें बच्चे एक लड़का और एक लड़की–एक पालने में सोये पड़े थे और सपनों में मुस्करा रहे थे।

उनकी माँ ने, जब उसको लगा कि वह मरने वाली है, अपना चोगा बच्चों के पैरों पर डाल दिया था ताकि वे गर्म रहें, और वह ठण्डी हो गई थी।

वे कितनी गहरी नींद में, अपने पुराने टुटहरे पालने में, शान्त साँसों और नन्हें चेहरों के साथ सो रहे थे! ऐसा लग रहा था कि उन सोते हुए अनाथ बच्चों को कुछ नहीं जगा सकता। बाहर बारिश बाढ़ की तरह बरसे जा रही थी, समुद्र चेतावनी की आवाजें निकाल रहा था। उस पुरानी टूटी हुई छत से, जिससे तूफानी हवा आ रही थी, एक पानी की बूँद उस मृत चेहरे पर गिरी, और एक आँसू की तरह बह गयी।

....

जैनी उस मृत औरत के घर में क्या कर रही थी? वह अपने चोगे के नीचे क्या छुपा कर लायी थी? उसका दिल क्यों इतना धड़क रहा था? वह इतने काँपते कदमों से क्यों जल्दी-जल्दी अपने झोंपड़े की तरफ आ रही थी, पीछे देखने की हिम्मत किये बिना? उसने अपने पलंग में, परदे के पीछे क्या छिपाया? उसने क्या चुराया था?

जब वह झोंपड़े में घुसी, चट्टानें सफेद होने लगी थी। वह पलंग के बगल में रखी कुर्सी पर गिर पड़ी। वह बिल्कुल पीली हो रही थी, ऐसा लग रहा था जैसे वह पछता रही हो। उसका माथा तकिये पर गिर गया और बीच-बीच में, अस्फुट शब्दों में, वह अपने आप से बड़बड़ा रही थी, जबकि कुटिया के बाहर शैतानी समुद्र कराह रहा था।

"मेरा घरवाला बेचारा! हे प्रभु, वह क्या कहेगा? उसके ऊपर पहले ही इतनी मुसीबतें हैं। मैंने यह क्या किया है? पहले ही हमारे पास पाँच बच्चे हैं! इनका पिता पिसता रहता है, पिसता रहता है और उसके बाद, जैसे कि उसके पास कम परेशानी है मैं उसे और परेशानियाँ दूँ। मैंने गलती की है–वह मुझे पीटे भी तो भी गलत नहीं होगा। क्या यह वो है? नहीं! ठीक है। दरवाजा ऐसे हिल रहा है जैसे कोई आ रहा है, लेकिन नहीं। मुझे उसके आने की बात सोचकर भी डर लग रहा है।"

वह विचारों में खोई रही, सर्दी से ठिठुरती हुई, बाहरी सारी आवाजों पर ध्यान दिये बगैर, चाहे समुद्री चिड़ियों की, जो चीखती हुई जा रही थीं, या फिर समुद्र और हवा के रोष की। तभी अचानक दरवाजा खुला, सुबह की रोशनी की एक पट्टी अन्दर आयी और मछुआरा अपने टपकते हुए जाल को लेकर घर की चौखट पर आ खड़ा हुआ, और खुशी से हँसते हुए बोला, 'लो ये आ गई जल सेना।"

"तुम!" जैनी बोली, और उसने अपने पति को बाँहों में भर लिया और अपना चेहरा उसकी खुरदरी जैकेट पर टिका दिया।

"लो, मैं आ गया!" उसने कहा और आग की रोशनी में उसका सौम्य और संतोषी चेहरा चमक उठा जिसे जैनी इतना चाहती थी।

"आज मेरी किस्मत खराब थी," वह बोला।

"तुम्हें कैसा मौसम मिला?"

"भयंकर।"

"और मछलियाँ?"

"बिल्कुल बेकार। लेकिन कोई बात नहीं। फिर से तुम मेरे पास हो और मैं संतुष्ट हूँ। आज मैंने कुछ नहीं पकड़ा, उल्टे मेरा जाल फट गया।

आज तो हवा में ही शैतान था। एक पल तो तूफान में मुझे ऐसा लगा कि नाव डूब जाएगी, और उसका रास्ता टूट गया। लेकिन तुम इतने समय क्या करती रही?"

अँधेरे में जैनी को कँपकँपी छूट गई।

"मैं?" उसने तनाव के साथ कहा, "ओह, कुछ नहीं, वही रोज वाला। मैं सिल रही थी। साथ ही मुझे समुद्र की गर्जन सुनाई पड़ रही थी और मैं डर रही थी।"

"हाँ, सर्दी में यह बहुत बुरा होता है। पर अब कोई चिन्ता की बात नहीं।" फिर, उसने ऐसे काँपते हुए कहा जैसे कोई अपराध करने जा रही हो।

"सुनो!" उसने कहा, "हमारी पड़ोसन मर गयी है। वह कल रात ही मरी होगी, जब तुम गये थे। उसके दो छोटे बच्चे हैं–एक का नाम विलियम है, दूसरे का मैण्डेलीन है। लड़का मुश्किल से चल पाता है और लड़की मुश्किल से बोल पाती है। वो बेचारी भली औरत बहुत जरूरतमन्द थी।"

मछुआरा गम्भीर हो गया। "मुसीबत!" अपनी तूफान से भीगी टोपी एक कोने में फेंक कर वह सिर खुजाते हुए बोला, "हमारे पास पहले ही पाँच बच्चे हैं, ये सात हो गये। और इस बुरे मौसम में हमें पहले ही खाने के बिना रहना पड़ रहा है। अब हम क्या करें? हुँह, यह मेरी गलती तो है नहीं, यह तो ईश्वर की करनी है। यह सब मेरे लिए समझ से बाहर है उसने इन नन्हों की माँ क्यों छीन ली? ऐसी चीजें समझना बहुत कठिन है। यह समझने के लिए तो बहुत विद्वान होना पड़ता है। कितने नन्हें छुटकू से बच्चे हैं! जैनी, जाओ उन्हें ले आओ, अगर जग गये होंगे तो अपनी मरी माँ के पास अकेले पड़े डर रहे होंगे। हम उन्हें अपनों के साथ ही पाल

लेंगे। वो हमारे पाँचों के भाई-बहन होंगे। जब ईश्वर देखेगा कि हमें अपनों के अलावा इस छोटी लड़की और लड़के को भी खिलाना है, वह हमें ज्यादा मछली देगा। और मेरा क्या? मैं पानी पी लूँगा। दोगुनी मेहनत कर लूँगा। बहुत हो गया। जाओ और उन्हें ले आओ! अरे पर क्या बात है? क्या तुम परेशान हो? तुम आमतौर पर इतनी देर नहीं लगाती?"

उसकी पत्नी ने परदा खोल दिया।

साभार : 'इन्द्रधनुष'

कविताएँ

मेरी गुड़िया

मेरी नन्ही-प्यारी गुड़िया
जाएगी ससुराल!
खुश होगी मन ही मन में,
जब आएगी बारात!

उसका दूल्हा होगा सुन्दर
कोई राजकुमार!
आएगा वह उड़ने वाले
रथ पर हुआ सवार!

मेरी गुड़िया सपनलोक की
बनकर तब पटरानी;
खूब करेगी अफरा-तफरी,
मौज और मनमानी!

-रावेन्द्रकुमार रवि, खटीमा

दो नावें

दो नावें कागज की लेकर,
आये किशन और गोपाल।
पहली डूब गयी पानी में,
दूजी जा पहुँची भोपाल।।

-डा. परशुराम शुक्ल

जाड़ा जी

आए मिस्टर जाड़ा जी
पढ़ते दाँत पहाड़ा जी,
कौन देश से चली हवा
सर्द हुआ जग सारा जी।

देखो सूरज को कुहरे ने
कैसे आज पछाड़ा जी,
खिड़की दरवाजे देते हैं
करो बन्द का नारा जी।

ऊनी स्वेटर कोट आये हैं
सूती कपड़ा हारा जी,
गरम पकौड़े, आलू बड़े
करते हमें इशारा जी।

-हर्षिता शर्मा, कक्षा-6,

कविताएँ

मुस्कुराता बचपन

खो खो, छुपा छुपउअल खेलो
भूलभुलय्या आओ
मेंढक मछली तितली पकड़ो
छुप छक छइयाँ आओ
फूल फलों को बीनो भर लो
झोली मह-महकाओ
भोले बचपन-सा मन कर लो
मर भर बोझ हटाओ
दम्भ, लोभ ओ' दिखावा छोड़ो
दर्प के दंश मिटाओ
हृदय में अपने बचपन भर लो
हर पल फिर मुस्कुराओ।

–शिवालिका, लखनऊ

शेर और हाथी

हाथी बोला सूँड़ उठाकर,
खाता दूध मलाई।
तभी आ गये शेरूदादा,
भागे हाथी भाई।।

–डा. परशुराम शुक्ल

तोता

एक तोता हरे रंग का
उड़ता फिरता था नील-गगन में
जहाँ भी देखता था वह कोई बाग
तो कुतर डालता था वह अनेक सब्जी और साग

एक बार हमारी इस धरा पर
बहेलिये ने बिछाया एक बड़ा-सा जाल
जिस में फँस गया वह बेचारा
हरे रंग का तोता चालाक

छूटकर जाल से निकल भागने की
कोशिश की उस तोते ने बहुत
लेकिन बहेलिये ने डालकर उसे एक तंग पिंजरे में
बेंच दिया एक छोटे लड़के को

उस तोते की आँखों में
जब उस लड़के ने देखी आज़ादी की चाहत
उसने उसे उड़ा दिया
फिर से उस नील गगन में

–विप्लव, कक्षा-11, नई दिल्ली

छोटा गौरैया

—मक्सिम गोर्की

गौरैये एकदम इंसानों की तरह होते हैं। उनमें जो बड़े होते हैं, वे एकदम उबाऊ, नीरस और नाली के ठहरे पानी की तरह होते हैं। उनके मुँह से निकला हर शब्द किताब से निकला हुआ होता है; लेकिन जो युवा होते हैं वे अपने दिमाग से सोचते हैं।

एक बार की बात है एक छोटा गौरैया रहता था और उसका नाम पुडिक था। वह स्नानघर की खिड़की के ऊपर मोटे सन के एक बढ़िया, गरम घोंसले में रहता था, जो काई और दूसरे मुलायम सामानों से बना था। उसने अभी तक उड़ने की कोशिश नहीं की थी, लेकिन अपने छोटे से पंखों को फड़फड़ाता रहता था और अपना सिर घोंसले से बाहर निकालता रहता था। वह यह जानने के लिए बहुत ही बेचैन था कि बाहर की दुनिया कैसी है और क्या वह उसके लिए पर्याप्त अच्छी है?

"क्यों बेटे, तुम बाहर कैसे निकले?" माँ गौरैये ने उससे पूछा और पुडिक ने अपने पंख हिलाये फिर नीचे मैदान में झाँका और चीं-चीं करने लगा। "लगता है नीचे बहुत ही खुशनुमा ठण्ड है! एकदम बढ़िया ठण्ड!"

फिर पापा गौरैया उसके खाने के लिए कुछ कीड़े लेकर घर आये और डींग हाँकने लगे। "मैं इस घर का मालिक हूँ! मैं मालिक हूँ!" और माँ गौरैया उसके समर्थन में चहचहाने लगी : "जी मालिक! जी मालिक!"

लेकिन पुडिक कीड़े को निगलता जा रहा था और अपने आप से कह रहा था : "वे तुम्हें चबाने के लिए कीड़े दे देते हैं और इसके बारे में कुछ भी करने से रोकते हैं।"

और उसने घोंसले से बाहर सिर निकालकर चारों ओर देखना जारी रखा।

"अरे बेटे! सुनो!" उसकी माँ ने उससे चीं-चीं करते हुए कहा। "ध्यान रहे तुम बाहर मत गिर जाना!"

"छोड़ो भी! मैं कैसे गिर सकता हूँ?" पुडिक ने कहा।

"तुम गिर जाओगे और अगर वहाँ पहले से ही बिल्ली हुई तो वह तुम्हें निगल जाएगी।" उसके पिता ने शिकार पर जाने से पहले उसे समझाया।

और इस तरह दिन बीतते जा रहे थे, लेकिन पुडिक के पंख जल्दी बढ़ ही नहीं रहे थे।

एक दिन अचानक तेज़ हवा चली।

"चीं-चीं! यह क्या हैं?" पुडिक जानना चाह रहा था।

"यह हवा है," माँ ने उसे बताया। "और यह तुम्हें घोंसले से बाहर फेंक सकती है। फिर अफसोस, नीचे तुम बिल्ली के पास चले जाओगे!"

पुडिक को वह आवाज अच्छी नहीं लग रही थी, इसलिए उसने कहा :

"पेड़ इस तरह झूम क्यों रहे हैं? चलों उन्हें झूमने से रोकें, फिर वहाँ कोई हवा नहीं रहेगी।"

उसकी माँ ने उसे समझाने की बहुत कोशिश की कि यह काम नहीं किया जा सकता है, लेकिन उसे विश्वास नहीं हो रहा था। हर चीज के बारे में उसकी अपनी एक अलग समझ थी।

एक आदमी स्नानघर के पास से गुजरा, उसके हाथ लटके हुए थे।

"जरूर उसके पंख को बिल्ली ने खा लिया होगा", पुडिक ने चीं-चीं करते हुए कहा। "केवल हड्डी ही बची है।"

"वह आदमी है, उसके पंख नहीं होते!" उसकी माँ ने कहा। "उनका यही काम है, बिना पंखों के जीना। वे अपने दो पैरों से फुदक सकते हैं, समझे?"

"लेकिन क्यों?"

"क्योंकि अगर उनके पंख होते तो वे हमारे पीछे आते, जैसे मैं और पापा कीड़ों के पीछे जाते हैं।"

"हुँह!" पुडिक ने उपेक्षा से कहा। "हर किसी के पास पंख होना चाहिए। ज़मीन पर रहने में उतना मजा कहाँ, जितना हवा में रहने में! जब मैं बड़ा हो जाऊँगा तो मैं चाहता हूँ कि हर कोई उड़ सके!"

इस तरह पुडिक को अपनी माँ की बातों पर विश्वास नहीं हुआ। यह समझने के लिए वह अभी बहुत छोटा था कि अगर उसने अपनी माँ की बातें नहीं मानीं तो कुछ गड़बड़ भी हो सकती है।

फिर वह घोंसले के एकदम किनारे चला गया और चीं-चीं कर गाने लगा, जिसे उसने खुद बनाया था।

पंखरहित सभी मनुष्यो,
तुम्हारे पैर एकदम बेकार की चीज़ हैं,
भले ही तुम बड़े हो, भले ही तुम लम्बे हो,
लेकिन तुम कीड़े के समान हो।
अब मुझे देखो, जितना छोटा मैं हो सकता हूँ, उतना हूँ,
पर जैसा तुम देखते हो, मैं कीड़ों को खाता हूँ।

और वह तब तक गाता रहा, जब तक कि घोंसले से बाहर नहीं गिर पड़ा। उसके बाद उसकी माँ भी उसके पीछे-पीछे नीचे आ गयी, और एक बड़ी और हरी-हरी आँखों वाली बिल्ली भी वहाँ थी।

पुडिक ने डर से अपने पंखों पर जोर लगाया। उसने अपने छोटे पंख फैलाये और छोटे धूसर पैरों से काँपते हुए कायरतापूर्वक चीं-चीं कर कहने लगा :

"बहुत खुशी हुई! मैं सच बोल रहा हूँ, आपको देखकर बहुत खुशी हुई।"

लेकिन माँ गौरैया ने उसे ढकेलकर एक तरफ कर दिया और अपने पंखों को सिकोड़कर पूरे साहस के साथ और बड़े ही भयावह रूप में अपनी चोंच खोलकर सीधे बिल्ली की आँखों में निशाना साधा।

"जाओ यहाँ से!" वह चिल्लायी। "ऊपर खिड़की पर जाओ, पुडिक! उड़ो..."

डर ने छोटे गौरेये को ज़मीन से उड़ा दिया। वह थोड़ा-सा उछला, एक बार अपने पंख फड़फड़ाये और दूसरी बार फिर फड़फड़ाये, और इस तरह वह खिड़की के कगार तक पहुँच गया।

फिर उसके पीछे-पीछे माँ भी आ गयी। वह अपने पंख खो चुकी थी, फिर भी बहुत खुश थी। उसने पुडिक के सिर पर हल्के से थपकी देते हुए कहा : "क्यों, कैसी रही?"

"कैसी रही क्या? एक बार में ही कोई हर चीज़ थोड़े सीख सकता है।" पुडिक ने कहा।

और बिल्ली मैदान में बैठी थी, माँ गौरेया के पंखों को अपने पंजे में उठाया, उसे देखा और बड़े ही अफसोस के साथ म्याऊँ करने लगी।

"मियाऊँ! कितना प्यारा, छोटा-सा गौरैया! एकदम बिल्ली जैसा! मियाऊँ!"

तो अन्त तो बढ़िया ही रहा, अगर हम माँ गौरैया के पंखों के नष्ट होने की बात को छोड़ दें!

—अनुवाद : नमिता

चील और धामन का घमासान
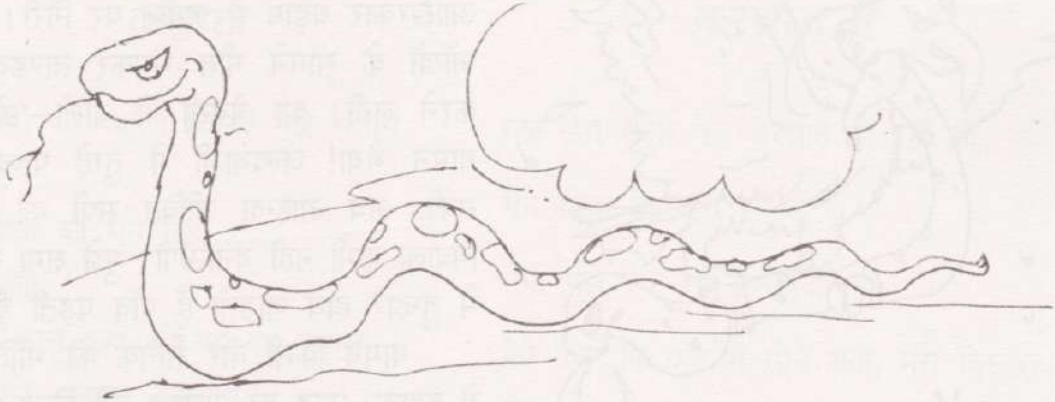
कई दिनों तक चील आकाश में भूखी-प्यासी शिकार की तलाश में मँडराती रही। जंगल में उसे कहीं मांस का कोई लोथड़ा दिखाई न पड़ा और न कोई छोटा जीव, जिसे वह अपना आहार बना सके।

एक रोज उसे धामन (घोड़ापछाड़) सर्प दिखाई पड़ा। उसके मुँह से लार टपकने लगी। भूख की आग और प्रचण्ड हो उठी। घोड़ापछाड़ किसी कार्य से पतली-पतली पगडण्डियों पर पूरे हर्ष-उन्माद से फुदकता-मचलता जा रहा था। अचानक चील ने उसे झपट्टा मारकर पकड़ लिया और उसे ले उड़ी किन्तु इस बार हड़बड़ी में एक ऐसी गलती कर गयी, जो उसने आज तक न की थी। उसने धामन को पूँछ के स्थान पर मुँह की ओर से पकड़ लिया।

आमतौर पर वह पूँछ की तरफ से सर्पों को पकड़ती थी। ऐसे में वे कमजोर और निढाल हो जाते फिर चील उन बेबस-पसली टूटे सर्पों को किसी एकान्त में ले जाकर खूब मजे से फुरसत में, नोंच-नोंच कर चट कर जाती। मगर इस बार संयोग से उसका पासा उलटा पड़ गया-पूँछ के स्थान पर टकरा बैठी धामन के मुँह से।

फिर भी, उसे खासे वेग से लिए उड़े जा रही थी-धामन अधीरता से बोला-'छोड़ दो अन्यथा आज गजब हो जायेगा।' उसका मुँह चील की चोंच से बाहर था लिहाजा उसे बोलने में कोई तकलीफ नहीं हो रही थी।

चील ने धौंस जमाई-'गजब क्या होगा बावरे! आज तुझे मजे से छककर अपनी कई दिनों की भूख शान्त करूँगी।'

'अगर तूने मुझे जरा भी नोंचा-खसोटा तो तेरी खैर नहीं, तेरी भलमनसी इसी में है, कि तू मुझे चुपचाप नीचे सही-सलामत छोड़ दे।'

'हाथ आया शिकार, छोड़ना हम चीलों के लिए बुजदिली मानी गई है। तुझे जो करना है कर, मुझे अपना काम करने दे।'

दोनों के वाकयुद्ध का तमाशा सारे जंगल

के पशु-पक्षी हैरानी से देखने लगे। जंगल के इस अद्भुत युद्ध को हर प्राणी अपनी आँखों में स्मृति बनाने को आतुर था। अब नौबत द्वन्द्व युद्ध तक आ पहुँची। चील उसे लिए चक्कर पर चक्कर काटे जा रही थी।

जिन्दगी और मौत के इस महासमर में किसे जिन्दगी नसीब होगी, और किसकी किस्मत में मौत लिख जायेगी, यह उत्सुकता-व्यग्रता सभी के चेहरों पर साफ-साफ झलक रही थी।

धामन अपनी पूँछ पूरी ताकत से उठा, चील की गर्दन में धीरे-धीरे लपेटने लगा। चील की गर्दन अब धामन की कुण्डली में कैद। कुण्डली के कसाव में चील फड़फड़ाने लगी। और चन्द क्षणों में उसका मंसूबा मिट्टी में मिलता नजर आने लगा। दोनों ओर से जोर आजमाइश का दौर शुरू हुआ। धामन पूरे बल से उसकी गर्दन किसी गीले कपड़े की भाँति धर-धर निचोड़ने लगा।

इस अनोखे आकाशीय युद्ध पर सभी आँखें गड़ाये गम्भीरता से देख रहे थे।

चील चरखी की भाँति उसे नचाते-नचाते आखिरकार धड़ाम से जमीन पर गिरी। उसकी आँखों के सामने मौत भंयकर ताण्डव नृत्य करने लगी। वह बेबसी में बोली-'छोड़ दो धामन भैया! जल्दबाजी में तुम्हें पहचान न सकी, अब आइन्दा जीवित सर्पों को अपना निवाला कभी नहीं बनाऊँगी। मुझे क्षमा कर दो मैं तुम्हारे हाथ जोड़ती हूँ पाँव पड़ती हूँ।'

धामन किसी वीर सैनिक की भाँति क्रोध में दहाड़ा-'युद्ध का आरम्भ तूने किया था। मैं तो तुझे पहले ही युद्ध करने से रोक रहा था, पर तेरी जिद और अकड़ ने तुझे इस स्थिति में पहुँचा दिया। अब मैं नहीं चाहता कि तू जीवित रहकर हम जीवित सर्पों को अपना आहार बनाती रहे।'

इस सम्वाद-विवाद के मध्य अन्ततः चील की साँसें एकाएक टूट गयीं। रक्त की कई धाराएँ उसकी गर्दन से छल-छल छल-छल करती हुई बह निकलीं। फिर उन पर भिनभिनाती मक्खियाँ धामन की जीत का जश्न मनाने लगीं। इधर भालू, बन्दर, लोमड़ी, तोता, मैना सहित तमाम पशु-पक्षी धामन की जीत पर तालियाँ पीट-पीट कर उसका खूब उत्साहवर्द्धन करने लगे। इस अनहोनी-अनोखी जीत पर सभी हैरान थे।

धामन चील को छोड़ कर चला, फिर भुरभुरी मिट्टी में बड़ी मौज से लोट लगायी, ताकि नन्हें-नन्हें घाव मुँद जाए और उन पर चींटियाँ-मक्खियाँ अतिक्रमण न कर पायें।

-सुरेश कुमार साहिल

कविताएँ

जहाज

लौट आयो वह जहाज जिसने मुझे सलाम
किया था
उसी जहाज को मैंने कहा.....
'जल्दी चलो'
परन्तु न जाने कहाँ खो गई वह जहाज
जिसने मुझे सलाम किया था!!

यादगार पेड़

अब तक याद है मुझे वह बरगद का पेड़
जिसके साथ हम रोज खेला करते थे
जिसकी डालियों पर हम झूलते थे
जिसकी ओट में हम छुपा छुपी खेलते थे
वह बरगद का पेड़ हमारे दिलों में ऐसे बस
गया
जैसे सबसे प्यारे रिश्तेदार की तस्वीर सोने की
सन्दूक में रखी हो
पर अफसोस अब उसका केवल ठूँठ बाकी है
हम आज भी उसके शेष भाग पर बैठकर
खेलते हैं

जैसे हमें उस छतनार पेड़ की याद आ रही है
वैसे शायद उसे भी हमारी याद आ रही
होगी!!

बरसात में

एक दिन बहुत तेज बरसात हो रही थी
मैंने सोचा कि जरा सो लूँ
तभी मुझे एक सपना आया
मैंने देखा कि जब मैं सोने गयी, मेरा बिस्तर
गीला है
मैं आश्चर्य चकित.......
बरसात में ऐसे भी होता है!!
फिर मैं रसोई में गयी
देखा कि सूरज डूब गया है
मैंने देखा कि मेरी कुर्सी सोफा भी गीला है
मैंने सोचा कि जमीन पर कपड़ा बिछाकर सा
जाऊँ
मगर यह क्या? जमीन भी गीली है!!
मैंने देखा कि मेरा शरीर भी गीला है
क्या यह सपना सच है या
बरसात में ऐसे भी होता है!!

–पांखुरी

नयी कलम से

टीनू की गाय

एक गाँव में एक मोची था। उसका नाम टीनू था। टीनू जूती सी कर अपना खर्चा बड़ी मुश्किल से चला पाता था। एक दिन टीनू ने गली में आवारा घूमती गाय को देखा। टीनू ने गाय को बेचने के लिए सोचा। वह अपनी पत्नी के पास गया। उसकी पत्नी ने कहा–हम इस गाय को नहीं बेचेंगे। इसे घर पर रखेंगे। टीनू ने भी हाँ कर दी। टीनू ने गाय को घर पर रख लिया और उसे खिलाने-पिलाने लगा। एक महीने बाद गाय को बछड़ा हुआ। टीनू ने गाय की खूब सेवा की। गाय दो सप्ताह बाद अच्छा दूध देने लगी। टीनू उसका दूध बेचने लगा और जल्दी-जल्दी पैसे कमाने के लिए खूब सारा पानी मिलाने लगा।

यह देखकर लोगों ने उससे दूध लेना बन्द कर दिया। वह परेशान हो गया।

एक दिन टीनू मोची का काम करने गया हुआ था परन्तु आज कोई भी ग्राहक नहीं आया था। इसलिए वह और भी ज्यादा परेशान हो गया। वह जल्दी घर आ गया और आकर गाय को खूब पीटा और उसे भगा दिया।

अब जब भी वह किसी काम की तलाश में इधर-उधर जाता, लोग उसे भगा देते। वह घर पर ही रहने लगा। उसकी पत्नी भी उसे छोड़कर चली गयी। अब वह अकेला बैठा था अपनी गाय को याद करके रो रहा था।

मोनिका, कक्षा-6, सोनीपत

बुन्नू की परीक्षा

बुन्नू सफेदी एक नन्हा खरगोश था। वह स्कूल में पढ़ता था। उसने इतिहास की कई किताबें पढ़ी थी। उसमें से कुछ थीं–"दो बिल्लियों की लड़ाई में बन्दर का फायदा", तथा "कबूतरों की एकता से बहेलिया हारा" इत्यादि-इत्यादि। परन्तु इनमें से उसे "कछुआ और खरगोश" नामक किताब सबसे अधिक पसन्द आयी थी।

इतिहास की मैडम कुन्नी कुतरानी ने सोमवार के दिन अपनी चुनी हुई किसी एक किताब में से मौखिक इम्तहान लेने की घोषणा की थी।

बुन्नू की चुनिन्दा किताब में हालाँकि उसी के किसी लक्कड़ दादा जी का रेस में कछुए से हारने का वर्णन था। फिर भी उसमें उनकी हार के कारणों पर ध्यान देने से, खरगोशों की पूरी जमात को एक ऐसी शिक्षा मिलती थी जिससे सीख ले कर, उनकी पीढ़ी

दर पीढ़ी की जीत सुनिश्चित हो सकती थी।

बुन्नू सफेदी की एक अच्छी आदत यह थी कि वह अपनी पाठ्य पुस्तक केवल रटता नहीं था, वरन् खूब सोच समझ कर शिक्षा ग्रहण करता था। लाइब्रेरी जाकर उस विषय की और पुस्तकें पढ़कर जरूरी बातें नोट करता था। साथ ही उन पर अपने विचारों को भी लिख लिया करता था। उसने अपनी प्रिय पुस्तक "कछुआ और खरगोश" को भी इसी तरह तैयार करके कण्ठस्थ कर लिया। अब उसे विश्वास था कि वह इतिहास की परीक्षा में अच्छे अंक लेकर पास हो जाएगा।

सोमवार को घण्टी बजते ही, इतिहास की मैडम कुन्नी कुतरानी ने परीक्षा हेतु सवाल पूछने शुरू किये। "लक्कड़ दादा दौड़ने में दूसरे खरगोश के समान तेज होने पर भी, धीमे रेंगने वाले कछुए से क्यों हारे? इनके चार कारण बताओ। प्रत्येक कारण के 25 अंक निर्धारित हुए।

अपनी बारी आने पर बुन्नू सफेदी ने लक्कड़ दादा की हार के जो चार कारण बताए वह इस प्रकार थे।

1. लक्कड़ दादा का अहंकारी स्वभाव

2. अपने ऊपर अन्यथा भरोसा

3. दुश्मन को कमजोर समझने की भूल तथा

4. काम के बीच में सुस्ती

टीचर जी ने बुन्नू सफेदी को सौ में से सौ अंक दे दिये।

सभी बच्चे चकित होकर बुन्नू के पास पहुँच गये और एक-एक करके अपनी समस्याएँ सुलझाने लगे-चुन्नी फरोंवाली ने पूछा-"बुन्नू बताओ, इस कहानी से हमको क्या शिक्षा मिलती है?

बुन्नू बोला, "इस कहानी से हमको यह शिक्षा मिलती है कि प्रकृति प्रदत्त गुणों को हमें पूरी निष्ठा के साथ माँजना चाहिये तथा समय आने पर पूरी सतर्कता के साथ उसका इस्तेमाल करना चाहिये तभी वह गुण आवश्यकता पड़ने पर हमारी मदद के काबिल बन सकेगा अन्यथा नहीं।" मुन्नू भूरिया बोला, "बुन्नू! यह समझाओ कि कछुए जी को तेज भागने का गुण तो मिला नहीं था। फिर उन्होंने क्या माँजा? किस निष्ठा से तैयारी की? उन्होंने क्या रेस भाग्य के सहारे जीती? बुन्नू सफेदी ने तुरन्त जवाब दिया-"भाग्य भी उसी का साथ देता है, जो अपनी मदद स्वयं करता है। कछुए जी ने आवश्यक समय पर निरन्तरता से अथक मेहनत की। अपने काम में लीन रह कर उन्होंने अपने से अधिक सक्षम खरगोश दादा जी को हरा दिया।"

बुन्नू सफेदी के जवाब से सभी बच्चे संतुष्ट एवं प्रसन्नचित हो गये। उन्होंने बुन्नू को अपना पक्का साथी चुन लिया। जबकि मैडम कुतरानी जी ने बुन्नू को क्रिकेट का बल्ला यह कहते हुए भेंट किया-"मुझे विश्वास है कि तुम मेहनत से दौड़-दौड़कर एक दिन सचिन से भी अधिक रन बना कर हमारे विद्यालय का नाम रोशन करोगे।"

बुन्नू सफेदी खुश-खुश अपनी साइकिल पर तेज पैडल मारता हुआ अपने घर की ओर चल पड़ा क्योंकि उसे अपने माँ-बाप को अपनी परीक्षा का फल दिखाने की बेहद जल्दी थी।

-शस्या हर्ष, लखनऊ

पूँछ

काले रंग का पिल्ला और सफेद रंग का बिल्ला। दोनों खेल रहे थे। खेलते-खेलते दोनों ने मुँह से मुँह मिलाया। बिल्ले को अपनी मूँछ छोटी लगी।

वह मिनमिनाया–उँ... हूँऽ...ऽ.. मेरी तो छोटी है!"

बिल्ला तेजी से घूम गया। पिल्ला भी घूम गया। दोनों ने पूँछ से पूँछ मिलायी। बिल्ले की पूँछ बड़ी निकली।

वह खुश हो गया–"वा ऽ..ऽ..ह! मेरी तो बड़ी है!"

बिल्ला भागा। पिल्ला भी उसके पीछे भागा। पिल्ला आगे निकल गया।

बिल्ला और तेज दौड़ा। अब बिल्ला आगे निकल गया।

दौड़ते-दौड़ते वे एक पेड़ के नीचे पहुँचे।

वहाँ बैठी छिपकली उनसे डर गई–"उई माँ ऽ...ऽ...! कैसे बचूँ इनसे?"

वे दोनों उसे पकड़ने दौड़े। वह पेड़ के तने की ओर दौड़ी।

अचानक छिपकली से कोई चीज अलग होकर गिरी। दोनों का ध्यान उस चीज की ओर गया, जो छटपटा रही थी। पिल्ले ने उसे सूँघा। डरकर पीछे हटा। बिल्ला भी पीछे हटा। फिर उसने उसकी ओर धीरे-धीरे पैर बढ़ाया। फिर कूदकर पीछे हटा। बिल्ला भी कूदकर पीछे हटा।

तभी बिल्ले को छिपकली की याद आयी। वह तेजी से मुड़ा। छिपकली को पकड़ने के लिए वह भी पेड़ पर चढ़ने लगा। पिल्ले ने भी

चढ़ने की कोशिश की। वह आगेवाले पैर पेड़ के तने पर टिकाकर खड़ा हो गया। ऊपर की ओर मुँह करके 'भौं-भौं' करने लगा। जैसे कह रहा हो–"पकड़ लो, पकड़ लो।"

छिपकली और ऊपर चढ़ी। बिल्ला भी और ऊपर चढ़ गया।

छिपकली और ऊपर चढ़ गयी। बिल्ला और ऊपर नहीं चढ़ पाया। फिसलने लगा।

पिल्ला भौंका–"सम्भल के भाई!"

बिल्ला नीचे उतर आया। पिल्ले ने उसका मुँह सूँघा। दोनों ने पूँछ से पूँछ मिलायी।

और...

दौड़ लगा-लगाकर फिर से खेलने लगे।

–रावेन्द्रकुमार रवि, खटीमा

जानकारी

–डा. परशुराम शुक्ल, दतिया

डॉलफिन

बच्चों की यह मित्र अनोखी,
नये-नये करतब दिखलाती।
और कभी तो अपने संग में,
दूर समन्दर तक ले जाती।।

डेढ़ करोड़ वर्ष पहले तक,
नम जमीन पर यह रहती थी।
लेती साँस अभी नथुनों से,
जैसे यह पहले लेती थी।।

रहती है सागर में लेकिन,
नदियों में भी पायी जाती।
गंगा और बेतवा वाली,
सूँस डॉलफिन ही कहलाती।।

मछली नहीं डॉलफिन बच्चों,
यह जीवित बच्चे उपजाती।
फिर मानव की तरह शान से,
उनको अपना दूध पिलाती।।

पराध्वनिक क्षमता के बल पर,
अपने दुश्मन से बच जाती।
पन्द्रह मील दूर दुश्मन की,
बच्चो इसे खबर हो जाती।।

बुद्धिमान चालाक चतुर यह,
मछली को आहार बनाती।
किन्तु मिल गया मानव यदि तो,
बिना मौत के मारी जाती।।
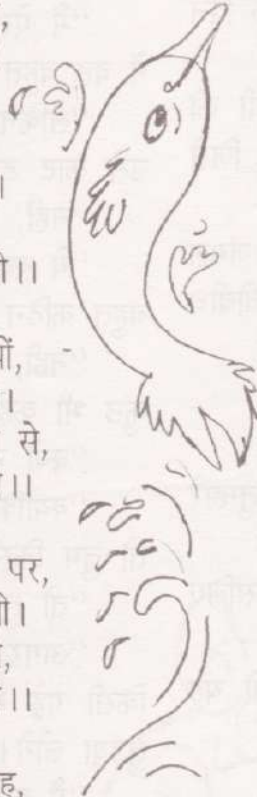
कंगारू

आस्ट्रेलिया के जंगल में,
एक जानवर पाया जाता।
पेट मध्य थैली के कारण,
सारे जग में जाना जाता।।

तीस किलोमीटर की गति से
कभी-कभी यह दौड़ लगाता।
और बीस फुट गहरी खाई
फाँद सरलता से यह जाता।।

मोटी और शक्तिशाली दुम,
करतब बड़े निराले करती।
दौड़ लगाते समय हमेशा,
इसका पैर पाँचवाँ बनती।।

जीव बड़ा पर एक इंच का,
नन्हा-सा बच्चा यह देता।
और जन्म के तुरत बाद ही,
अपनी थैली में रख लेता।।

थैली के भीतर बच्चे के
आँख, नाक, दो कान निकलते
इसके साथ जिस्म के सारे,
छोटे-बड़े अंग भी बनते।

सात माह में विकसित होकर
शावक सा बाहर आ जाता।
तीस माह का होने पर यह,
अपना पूर्ण रूप पा जाता।।

गधा और ऊदबिलाव
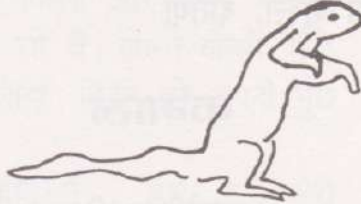
–सर्गेई मिखाल्कोव
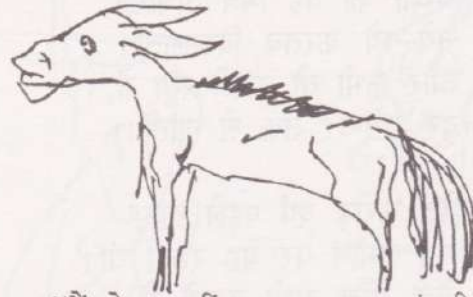
एक बार की बात है, जंगल के बीचोबीच गलियारे में एक बहुत प्यारा नन्हा पेड़ था।

एक दिन एक गधा दौड़ता हुआ उस जंगली रास्ते पर आया; लेकिन जब वह दूसरी ओर देख रहा था, उसी समय पेड़ से टकरा गया; और उसे इतनी तेज चोट लगी कि दिन में तारे नज़र आने लगे।

गधे को बहुत गुस्सा आया। वह नदी की ओर गया और बाहर से ऊदबिलाव को, जिसे वह पहले से जानता था, पुकारने लगा–

"मैं पूछता हूँ, ऊदबिलाव! क्या तुम जंगल की उस जगह को जानते हो, जिसके बीचोबीच एक पेड़ लगा हुआ है।"

"हाँ-हाँ, मैं जानता हूँ!"

"तो तुम मेरा एक काम कर दो–

जाओ और उस पेड़ को गिरा दो–तुम्हारे पास तो बहुत नुकीले दाँत हैं।"

"लेकिन तुम इस धरती पर किसलिए हो?"

"मेरा सिर उससे टकरा गया, देखो यह गूमड़–कितना बड़ा-सा है?"

"तुम्हारी नज़रें कहाँ थीं?"

"कहाँ? कहाँ थी मतलब? मैं दूसरी ओर देख रहा था! मेहरबानी करके जाओ और पेड़ को काट डालो!"

"मैं ऐसा नहीं कर सकता। जंगली रास्ते में वह बहुत अच्छा लगता है।"

"लेकिन वह मेरे रास्ते में आया। मेरे लिए उसे काट डालो, ऊदबिलाव!"

"नहीं, मैं नहीं काटूँगा!"

"ये क्या बात हुई; क्या यह तुम्हारे लिए बहुत कठिन है?"

"नहीं, पर मैं ऐसा नहीं करूँगा, चाहे तुम कुछ भी कहो!"

"क्यों नहीं करोगे?"

"क्योंकि अगर मैंने ऐसा कर भी दिया, तो तुम किसी झाड़ी से टकरा जाओगे!"

"तो तुम झाड़ी को उखाड़ देना।"

"अगर मैंने ऐसा भी कर दिया तो तुम किसी गड्ढे में गिर जाओगे और अपनी टाँगें तुड़वा लोगे।"

"मैं क्यों ऐसा करूँगा?"

"क्योंकि तुम एक गधे हो।" ऊदबिलाव ने कहा।

–अनुवाद : नमिता

कविताएँ

तो फिर कितना अच्छा हो

हँसता-गाता मौज मनाता,
दुनिया का हर बच्चा हो,
तो फिर कितना अच्छा हो!

कन्धे पर लटकाए थैला,
कूड़ा-कचरा भरता है।
मजबूरी में मारा-मारा,
बच्चा दर-दर फिरता है।

औरों जैसा उस बच्चे के
कन्धे पर भी बस्ता हो,
तो फिर कितना अच्छा हो!

जिन हाथों में कप-प्लेटें हैं,
उनमें अगर खिलौने हों।
जिन आँखों में दुःख की छाया,
उनमें स्वप्न सलोने हों।

अगर दूसरे बच्चे जैसा,
वह बच्चा भी हँसता हो,
तो फिर कितना अच्छा हो!

नन्हीं जान, काम है ज्यादा,
मालिक की फटकार मिले।
कुछ तो हो कि जिससे उसको,
खुशियों का संसार मिले।

बचपन वापस मिले और,
अधिकारों की भी रक्षा हो,
तो फिर कितना अच्छा हो!

साभार : 'नई पौध' से
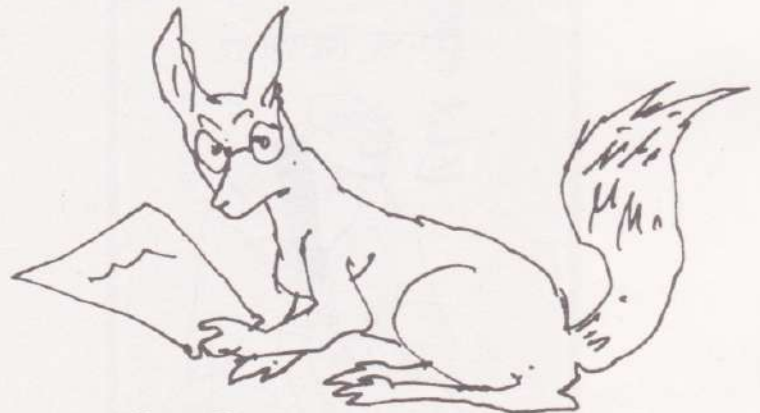
रोज नियम से पढ़ा करो

खबर भेज कर फिर सियार ने
"कालू जी" को बुलवाया।
पूछा, क्यों अच्छी बातों को
जानबूझ कर ठुकराया।।

पाठ पढ़ाते थे जब टीचर
तब तुमने कुछ सुना नहीं!
मस्त रहे थे खेल-कूद में
मन में कुछ भी गुना नहीं।।

मना किया था मैंने तुमको
उछल-कूद मत किया करो!
माना, खेल जरूरी है पर
रोज नियम से पढ़ा करो।।

–मोहम्मद फहीम

बिन पुस्तक जीवन ऐसा
बिन खिड़की घर हो जैसा

अनुराग बाल पुस्तकालय

मनोरंजक, ज्ञानवर्द्धक, उत्कृष्ट पुस्तकों का संग्रह, कला, साहित्य, संस्कृति, विज्ञान, खेलों आदि पर रोचक किताबें और पत्र-पत्रिकाएँ, प्रेरक जीवनियाँ, देश-विदेश का चुनिन्दा बढ़िया साहित्य

सोमवार से शनिवार, शाम तीन से सात बजे तक

डी-68, निरालानगर, (गोमती मोटर्स के सामने) लखनऊ-226020
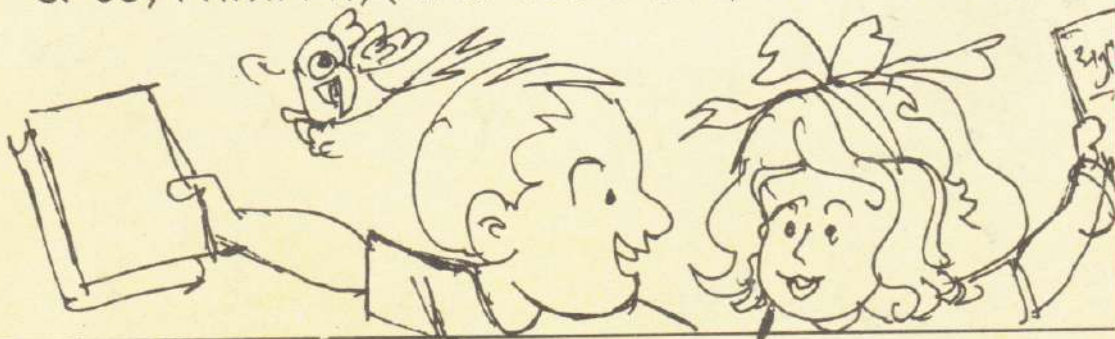
अनुराग ट्रस्ट की दिलचस्प किताबें पढ़ो!

कोहकाफ का बन्दी	लेव तोलस्तोय	15 रुपये
पराये घोंसले में	फ़्योदोर दोस्तोयेव्स्की	10 रुपये
सदानन्द की छोटी दुनिया	सत्यजीत राय	10 रुपये
कंगूरे वाले मकान का रहस्यमय मामला	होल्गर पुक्क	08 रुपये
मदारी	अलेक्सान्द्र कुप्रिन	15 रुपये
गोलू के कारनामे	रामबाबू	12 रुपये

अनुराग ट्रस्ट के सभी प्रकाशनों के मुख्य वितरक
जनचेतना, डी-68, निरालानगर, लखनऊ-226020
जनचेतना, 989, पुराना कटरा, मनमोहन पार्क, युनिवर्सिटी रोड, इलाहाबाद
जनचेतना, 29, यूएनआई अपार्टमेण्ट, सेक्टर-11, वसुंधरा, गाज़ियाबाद-201010
जनचेतना, जाफरा बाजार, गोरखपुर-273001